" दीप हैं जलते रहेंगे, हम प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

प्रेरणा भारती

www.preranabharati.com Email: preranabharati@gmail.com

हरिदर्शन HARIDARSHAN

हमारे यहाँ धार्मिक पुस्तक के साथ पूजा-पाठ, हवन-पूजन की सामग्री उचित मूल्य पर प्राप्त करें

मेहरपुर, शिलचर, असम-788015
मो.नं. 9435213512,

Postal Registration No.RN-SC-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 194 वर्ष -11 अषाढ़ शुक्ल सप्तमी 2082 बुधवार (22 जुलाई 2026) मूल्य-5 रुपये, पृष्ठ-6, preranabharati@gmail.com

असम एनआरसी से बाहर हुए लोगों की अपील प्रक्रिया शुरू करने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से मांगा जवाब

नई दिल्ली, २१ जुलाई: सवीच्च न्यायालय ने असम की अंतिम राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) से बाहर रह गए लोगों के लिए अपील प्रक्रिया तत्काल शुरूकरने की मांग संबंधी याचिका पर केंद्र सरकार, असम सरकार तथा अन्य संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

यह याचिका असम स्टेट जमीयत उलेमा की ओर से दायर की गई थी, जिस पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम. पंचोली की पीठ ने सुनवाई की। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता ने न्यायालय को बताया कि अंतिम एनआरसी से बाहर हुए लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड.रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों के लिए कानून में अपील का प्रावधान तो है, लेकिन अब तक उस प्रक्रिया को शुरूनहीं किया गया है। अधिवक्ता ने अदालत को यह भी बताया कि इसी प्रकार का एक अन्य मामला पहले से ही सवीच्च न्यायालय में लंबित है।

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

असम में बाढ. का प्रकोप, मृतकों की संख्या १३ पहुंची, ११ जिलों के ३.१३ लाख से अधिक लोग प्रभावित

गुवाहाटी, २१ जुलाई (हि.स.)। असम में बाढ.की स्थिति अब भी गंभीर बनी हुई है। राज्य में बाढ.से मरने वालों की संख्या बढ़कर १३ हो गई है, जबकि ११ जिलों के ३.१३ लाख से अधिक लोग प्रभावित हैं। पडोसी पहाडी राज्यों, विशेषकर नगालैंड में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश और बादल फटने की घटनाओं के कारण अचानक आई बाढ.से राज्य की कई प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। इससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है और राहत एवं बचाव कार्य युद्धस्तर पर जारी है।असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) के अनुसार, सबसे अधिक प्रभावित जिलों में चराइदेव, शिवसागर और जोरहाट शामिल हैं। अकेले शिवसागर जिले में करीब १.५८ लाख लोग बाढ.से प्रभावित हैं। राज्यभर में ७९४ गांव जलमग्न हो चुके हैं, जबकि १९,०९९ हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि बाढ.के पानी में डूब गई है। इसके अलावा लगभग ५.९७ लाख पशु एवं पोल्ट्री भी प्रभावित हुए हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पडा है।एएसडीएमए के मुताबिक, ब्रह्मपुत्र नदी निमातीघाट, बुढीदिहिंग नदी खोवांग, दिखौ नदी शिवसागर, दिसांग नदी नांगलामुराघाट तथा धनसिरी नदी गोलाघाट और नुमालीगढ.में खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। लगातार बढते जलस्तर के कारण निचले इलाकों में जलभराव और कटाव की स्थिति गंभीर बनी हुई है। बाढ.का असर सडक़ और रेल यातायात पर भी पडा है। नाजिरा-गेलेकी सडक़ का एक बडा हिस्सा बह जाने से शिवसागर और नाजिरा के बीच सडक़ संपर्क पूरी तरह बाधित हो गया है। वहीं टियक के पास राष्ट्रीय राजमार्ग-७१५ जलमग्न होने से आवागमन प्रभावित है।

रेल सेवाओं पर भी बाढ.का व्यापक असर देखने को मिला है। सिमलुगुडी रेलवे स्टेशन के यार्ड और रेल पटरियों पर पानी भर जाने के कारण पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे ने ३० से अधिक ट्रेनों को रद्द, डायवर्ट या शॉर्ट टर्मिनेट कर दिया है। इससे यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड.रहा है।

प्रशासन की ओर से राहत एवं बचाव कार्य तेजी से जारी है। भारतीय सेना, भारतीय वायुसेना, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) तथा अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाओं की टीमें प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने में जुटी हैं। राज्य सरकार ने अब तक ५२ राहत शिविर एवं राहत वितरण केंद्र स्थापित किए हैं, जहां १२,७२० से अधिक विस्थापित लोगों को आश्रय, भोजन और अन्य आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।प्रशासन ने नदियों के किनारे और निचले इलाकों में रहने वाले लोगों से सतर्क रहने, अनावश्यक यात्रा से बचने तथा स्थानीय प्रशासन की ओर से जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपील की है।

बाढ प्रभावितों तक हवाई मार्ग से राहत सामग्री पहुंचाने का अभियान जारी: मुख्यमंत्री

गुवाहाटी, २१ जुलाई (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने कहा है कि राज्य सरकार का बाढ.प्रभावित लोगों तक राहत पहुंचाने का अभियान लगातार जारी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर जानकारी देते हुए बताया कि शिवसागर जिले के नाजिरा सहित विभिन्न बाढग्रस्त इलाकों में भारतीय वायुसेना के सहयोग से हवाई मार्ग से आवश्यक राहत सामग्री भेजी जा रही है।मुख्यमंत्री ने बताया कि अभियान के पहले चरण में ३०० किलोग्राम, दूसरे चरण में २२७ किलोग्राम और तीसरे चरण में १०० किलोग्राम आवश्यक राहत सामग्री प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचाई गई है। उन्होंने कहा कि दुर्गम क्षेत्रों में फंसे प्रत्येक व्यक्ति तक जरूरी सहायता पहुंचाने के लिए सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है।डॉ. सरमा ने कहा कि राज्य सरकार और भारतीय वायुसेना के संयुक्त प्रयासों से राहत एवं बचाव अभियान लगातार जारी रहेगा, ताकि बाढ.प्रभावित लोगों को समय पर आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

असम बाढ.: एनडीआरएफ ने गले तक पानी में फंसी युवती समेत पांच लोगों को बचाया

जोरहाट (असम), २१ जुलाई (हि.स.)। असम के जोरहाट जिले में बाढ.के बीच राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की टीम ने साहस और त्वरित कार्रवाई का परिचय देते हुए पांच लोगों की जान बचाई। टियक रेवेन्यू सर्कल के सेलेंग टी एस्टेट के निकट सेलेंग घाट के बाढ.प्रभावित क्षेत्र में चलाए गए विशेष बचाव अभियान के दौरान गले तक पानी में फंसी एक युवती, तेज बहाव में बह रहे एक व्यक्ति तथा तीन महिलाओं को सुरक्षित बाहर निकाला गया। इनमें एक बुजुर्ग महिला की हालत गंभीर थी, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल भेजा गया।

प्रथम बटालियन एनडीआरएफ ने मंगलवार को बताया कि जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए), जोरहाट से सूचना मिलने के बाद डेप्यूटी कमांडेंट एन.के. तिवारी के पर्यवेक्षण और इंस्पेक्टर के.बी. नाथ के नेतृत्व में एक विशेष बचाव दल को सोमवार शाम सेलेंग घाट के बाढ. प्रभावित इलाके में तैनात किया गया। टीम ने शाम करीब ७:३५ बजे खोज एवं बचाव अभियान शुरू किया, जो देर रात तक जारी रहा।अभियान के दौरान बचाव दल को पास के एक जलमग्न घर से मदद के लिए चीखने की आवाज सुनाई दी। टीम तुरंत मौके पर पहुंची तो देखा कि एक युवती घर की छत के बांस के सहारे किसी तरह खुद को बचाए हुए थी। बाढ.का पानी उसके गले तक पहुंच चुका था और उसका सिर छत से सटा हुआ था। कुछ देर और पानी बढता तो उसकी जान पर गंभीर खतरा मंडरा सकता था। एनडीआरएफ के जवानों ने बिना समय गंवाए युवती तक पहुंचकर उसे सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

इसी दौरान बचाव दल की नजर तेज बहाव में बह रहे एक व्यक्ति पर पडी, जो केले के तने का सहारा लेकर किसी तरह खुद को पानी की सतह पर बनाए रखने की कोशिश कर रहा था। जवानों ने तत्काल रेस्क्यू बोट की मदद से उसके पास पहुंचकर उसे भी सुरक्षित निकाल लिया।बचाए जाने के बाद

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

मंत्री केशव महंता ने जोरहाट में बाढ. के हालात का रिव्यू किया, राहत और मुआवजे.का ऐलान किया

जोरहाट :(अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: असम के रेवेन्यू और डिजास्टर मैनेजमेंट, साइंस, टेक्नोलॉजी और क्लाइमेट चेंज, और जनरल एडमिनिस्ट्रेशन मंत्री केशव महंता ने जोरहाट जिले में बाढ.के हालात का दो दिन तक रिव्यू किया, जिसमें उन्होंने प्रभावित इलाकों, राहत कैंपों का दौरा किया और जिले के अधिकारियों के साथ हाई-लेवल मीटिंग करके बचाव और राहत कामों का जायजा लिया।पहले दिन, मंत्री ने टीओक MLA विकास सैकिया और जोरहाट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी के साथ मौजूदा हालात का जायजा लेने के लिए कई बाढ. प्रभावित जगहों का दौरा किया।मंगलवार को, अपने दौरे के दूसरे दिन, महंता के साथ मरियानी MLA रूपज्योति कुमी, टिटाबोर MLA धीरज गोवाला, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर,

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

बाढ.की भयावह स्थिति के बीच राज्यसभा सांसदों ने मुख्यमंत्री राहत कोष में दिया वेतन का अंशदान

गुवाहाटी, २१ जुलाई (हि.स.)। असम में बाढ.की गंभीर स्थिति को देखते हुए राज्यसभा सांसद तेंस गोवाला और योगेन महन ने मुख्यमंत्री राहत कोष में अपने वेतन का अंशदान देकर राहत एवं पुनर्वास कार्यों में सहयोग किया है।उल्लेखनीय है कि नगालैंड के मोन जिले में बादल फटने और मूसलाधार बारिश के कारण ऊपरी असम में बाढ. की स्थिति और गंभीर हो गई है।काबी पहाडियों में सोमवार को हुई भारी बारिश के चलते डिजू नदी का जलस्तर बढने से कलियाबर के कई इलाके जलमग्न हो गए हैं। कलियाबर के शालना, कालापानी और आमगुडी क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं।दोनों गांवों के लगभग ९० परिवारों के करीब ५०० लोग बाढ.से प्रभावित हुए हैं। कई घरों में पानी घुस गया है और जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। प्रशासन हालात पर नजर बनाए हुए है तथा राहत कार्य जारी हैं।

शिलचर पुलिस की नशा-विरोधी कार्रवाई में बडी सफलता, स्कूटी से भारी मात्रा में गांजा बरामद

प्रे.सं. शिलचर २१ जुलाई : शिलचर से रानू दत्त की रिपोर्ट। बराक घाटी में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत शिलचर पुलिस को एक और बडी सफलता मिली है। गुप्त सूचना के आधार पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर नेशनल हाईवे पेट्रोल पोस्ट के प्रभारी लक्षज्योति गोगोई के नेतृत्व में पुलिस ने शिलचर के आश्रम रोड इलाके में विशेष अभियान चलाया।अभियान के दौरान एक स्कूटी की तलाशी लेने पर पुलिस ने भारी मात्रा में गांजा बरामद किया। पुलिस ने स्कूटी चालक सहित दो संदिग्ध मादक पदार्थ तस्करों को हिरासत में लिया है। दोनों को सदर थाने ले जाकर पूछताछ की जा रही है।पुलिस सूत्रों के अनुसार, मामले में अन्य लोगों की संलिप्तता की भी जांच की जा रही है। जांच के दौरान सामने आने वाले तथ्यों के आधार पर संबंधित लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।नशे के खिलाफ शिलचर पुलिस का अभियान लगातार जारी है।

धोलाई थाना पुलिस की बडी सफलता: ऑटो-रिक्शा के गुप्त चैंबर से संदिग्ध हेरोइन बरामद

प्रे.सं.धोलाई, २१ जुलाई: बराक घाटी में मादक पदार्थों के खिलाफ जारी अभियान के तहत धोलाई थाना पुलिस को एक और बडी सफलता मिली है। गुप्त सूचना के आधार पर सोमवार शाम धोलाई थाने के सामने चलाए गए विशेष नाका चेकिंग अभियान के दौरान एक पेट्रोल चालित ऑटो-रिक्शा से संदिग्ध हेरोइन बरामद की गई।पुलिस के अनुसार, ऑटो-रिक्शा की चालक सीट के अंदर बेहद शातिराना तरीके से बनाए गए एक गुप्त चैंबर में चार साबुनदानी में मादक पदार्थ छिपाकर रखा गया था। तलाशी के दौरान पुलिस ने इसे बरामद कर लिया। मामले में ऑटो-रिक्शा चालक सेबुल हुसैन बरभुइयां (२७) को गिरफ्तार किया गया है।बरामद मादक पदार्थ की अनुमानित बाजार कीमत

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

दलाल सिराज को आज ही गिरफ्तार करने का मुख्यमंत्री ने दिया आदेश

गुवाहाटी, २१ जुलाई (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने पलाशबाडी के कथित दलाल सिराज अली की तत्काल गिरफ्तारी की मांग करने वालों को आज कार्रवाई का आश्वासन देते हुए पुलिस को सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर बताया कि सिराज अली पर पलाशबाडी के मेहनतकश लोगों की करोडों रुपये की रकम हडपने के गंभीर आरोप हैं।मुख्यमंत्री ने बताया कि स्थानीय लोगों ने स्वयं उनसे मिलकर सिराज अली के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में आरोप लगाया गया कि सिराज अली ने लोगों को झांसे में लेकर बडी धनराशि का गबन किया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपित की तत्काल गिरफ्तारी की बात कही।

महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ परिसर में रुद्राक्ष के पौधों का वृक्षारोपण

विशेष प्रतिनिधि लखनऊ, २१ जूलाई। महामना शिक्षण संस्थान के लखनऊ स्थित परिसर में सोमवार को पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति संवर्धन के उद्देश्य से वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारी अवनींद्र चतुर्वेदी, शिक्षाविद् आशीष मिश्रा तथा असम के वरिष्ठ पत्रकार दिलीप कुमार ने संयुक्त रूप से रुद्राक्ष के पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर अवनींद्र चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में रुद्राक्ष का विशेष आध्यात्मिक महत्व है। उन्होंने कहा कि रुद्राक्ष का पौधा लगाना भगवान शिव के प्रति आस्था का प्रतीक होने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक सार्थक पहल है। उन्होंने सभी से अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर उनके संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम में महामना शिक्षण संस्थान के पदाधिकारी नरेंद्र मिश्रा, दुर्गेन्द्र शुक्ला सहित संस्थान के अनेक विद्यार्थी एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

लव जिहाद: नाबालिग लडक़ी का अपहरण और बलात्कार, आरोपित नूर हुसैन गिरफ्तार, गुस्साई भीड. ने घर को फूंका

बिश्वनाथ (असम), २१ जुलाई (हि.स.)। बिश्वनाथ जिले में एक लव जिहाद की घटना ने तीव्र आक्रोश और सनसनी पैदा कर दी है।शिकायत के अनुसार, नूर हुसैन नामक एक युवक ने खुद को 'राहुल' नामक हिंदू बताकर एक हिंदू नाबालिग लडक़ी को प्यार के जाल में फंसाया, फिर उसे अगवा कर उसके साथ बलात्कार किया।घटना सामने आने के बाद पुलिस ने आरोपित नूर हुसैन को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस जांच जारी रखे हुए है।इस घटना की खबर फैलने के बाद स्थानीय लोग उत्तेजित हो गए और आरोपित के घर में आग लगा दी। स्थिति को नियंत्रित रखने के लिए पुलिस ने इलाके में सुरक्षा व्यवस्था कडी कर दी है।बिश्वनाथ पुलिस ने इस मामले में एक प्राथमिकी दर्ज कर कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी है।

३० जुलाई से २८ अगस्त २०२६ तक से गोकुल धाम में शिव महायज्ञ एवं रुद्र महायज्ञ का आयोजन

प्रे.सं. सिलचर,२१ जुलाई : कछार जिले के गोकुल धाम, (सिलचर) में आगामी ३० जुलाई से २८ अगस्त २०२६ तक भव्य शिव महायज्ञ एवं रुद्र महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। आयोजन को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में हैं तथा श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर धर्मलाभ लेने की अपील की गई है। आयोजकों के अनुसार, प्रत्येक वर्ष गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित होने वाले इस धार्मिक अनुष्ठान का उद्देश्य विश्व शांति, जनकल्याण और सनातन धर्म के प्रति आस्था को सुदृढ करना है। इस वर्ष भी शिवभक्तों के सहयोग से महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन के कार्यक्रम के अनुसार ३० जुलाई को प्रातः ७ बजे शिव जी की कलश शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसके बाद ३१ जुलाई से २८ अगस्त तक प्रतिदिन प्रातः ७ बजे शिवलिंग का वैदिक मंत्रों से पूजन-अर्चन एवं रुद्राभिषेक किया जाएगा।आयोजकों ने सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करें तथा इस धार्मिक अनुष्ठान को सफल बनाने में सहयोग दें। उन्होंने कहा कि लोक कल्याण की भावना से आयोजित इस महायज्ञ में तन, मन और धन से सहयोग भी आमंत्रित है। यह आयोजन गायत्री परिवार, जिला कछार (असम) के तत्वावधान में संपन्न होगा। अधिक जानकारी के लिए आयोजकों ने संपर्क सूत्र ९४०१७८७७४६ एवं ८९३६०७०६९९ जारी किए हैं।

स्थान: गोकुल धाम,, भकतपुर, सिलचर, जिला कछार (असम)।

दिल्ली की सडक़ों पर उतरे हजारों युवाओं ने कैसे बढाई मोदी सरकार की मुश्किलें

नई दिल्ली (एजें) २१ जुलाई : सोमवार को देश की राजधानी दिल्ली के दिल सेंट्रल दिल्ली में दिनभर हंगामा होता रहा. बात चाहे कनॉट प्लेस (सीपी) की हो, जनपथ की या फिर जंतर-मंतर की, कुछ नजर आ रहा था वो थी हजारों, हजार युवाओं की भीड.जो कई जगहों पर मेट्रो स्टेशनों, सडक़ों के बंद होने के बावजूद तमाम मुश्किलों को पार करते हुए सोमवार सुबह से ही जंतर-मंतर पर पहुंचने की कोशिशों में जुटे थे.लाठियों और आंसू गैस के गोलों के बीच ये युवा सुबह से लेकर देर शाम तक जंतर-मंतर पर जमे रहे.शिक्षा व्यवस्था में सुधार और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे.की मांग को लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर पर बीते करीब एक महीने से कॉकरोच जनता पाटी (सीजेपी) की अगुवाई में आंदोलन चल रहा है.एक सवाल बार-बार उठ रहा था कि जिस कॉकरोच जनता पार्टी को सोशल मीडिया पर कुछ ही दिनों के अंदर करोडों फॉलोअर्स मिल गए थे, वो आखिर जमीन पर कितनी मजबूत है ?लेकिन सोमवार को इस बात का जवाब मिल गया. कॉलेज में पढने और परीक्षाओं की तैयारियों करने वाले बच्चे बडी तादाद में सडक़ पर उतरे और दिखाया कि सरकार के लिए उनके सवालों पर लंबे वक्त तक चुप्पी बनाए रखना मुमकिन नहीं होगा.युवाओं के इस आंदोलन को बीते एक महीने से कवर कर रही स्वतंत्र पत्रकार स्मिता शर्मा का मानना है कि इन बच्चों ने केंद्र सरकार को संदेश दे दिया है कि परेशानी सिर्फ.शिक्षा व्यवस्था की नहीं है, बल्कि महंगाई, बेरोजगारी जैसे दूसरे मुद्दों पर को भी वो अनदेखा नहीं कर सकती है.दरअसल, कॉकरोच जनता पार्टी की ओर से केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे.की मांग को लेकर सोमवार को संसद मार्च का आह्वान किया गया था. इसी कॉल के मद्देनजर बडी संख्या में युवा दिल्ली की सडक़ों पर उतरे.वहीं केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा का कहना था कि प्रदर्शनकारियों की ओर से बातचीत का प्रस्ताव आया था.केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने एक्स पर मुलाकात की तस्वीर पोस्ट की है. उन्होंने लिखा, 'आज सुबह पहली बार प्रदर्शनकारियों की ओर से सरकार के साथ बातचीत करने का प्रस्ताव आया और सुबह ११:५० बजे से ही हमारी बातचीत जारी है.''सौहार्दपूर्ण वातावरण में मुलाकात हुई. उनके डेलीगेशन के साथ विस्तार से पहले मौखिक चर्चा हुई और फिर उनके द्वारा लगभग ४ बजे मुझे

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

बराक घाटी में स्थायी हाईकोर्ट बेंच की मांग को लेकर जगी उम्मीद मुख्यमंत्री और गुवाहाटी हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से मुलाकात के बाद आंदोलनकारी समिति आशान्वित

प्रे.स.,शिलचर २१ जुलाई: बराक घाटी में गुवाहाटी हाईकोर्ट की स्थायी पीठ (बेंच) की स्थापना की लंबे समय से चली आ रही मांग को लेकर एक बार फिर नई उम्मीद जगी है। हाईकोर्ट बेंच डिमांड इम्प्लीमेंटेशन कमेटी की कछार जिला शाखा के नेताओं ने मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा तथा गुवाहाटी हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के साथ हालिया बैठक के बाद मांग के शीघ्र समाधान को लेकर सकारात्मक संकेत मिलने का दावा किया है।कमेटी के अध्यक्ष ध्रुव कुमार साहा ने बताया कि १६ जुलाई को प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री तथा गुवाहाटी हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से मुलाकात की। उनके अनुसार, मुख्यमंत्री ने संकेत दिया कि राज्य सरकार की ओर से इस मामले में

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

!! नकारात्मक विचारों का आना तय है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उन्हे कितना महत्व देते हैं। !!

सम्पादकीय.....

भारत में खुदरा मुद्रा स्फीति

बढ़ती मुद्रा स्फीति के कारण ब्याज दरों में कटौती की कोई गुंजाइश नहीं है, नई सीपीआई श्रृंखला के तहत भारत की खुदरा मुद्रा स्फीति दर पहली बार भरारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के चार फीसदी के लक्ष्य से परे चली गई है। यह जून में बढ़कर ४.३८ फीसदी हो गई। मई में यह दर ३.९३ फीसदी और एक साल पहले लगभग २.७ फीसदी थी। ताजा आंकडे कीमतों के दबाव के व्यापक असर को दिखाते हैं। यह दबाव पहले मुख्य रूप से उत्पादक के स्तर तक ही सीमित था, लेकिन फरवरी के आखिर में अमेरिका-ईरान के बीच हुए टकराव के बाद परिवहन और ईंधन की बढ़ती लागत की वजह से अब आगे भी फैल गया है। नतीजतन, थोक और खुदरा मुद्रा स्फीति के बीच का अंतर बहुत मामूली रूप से कम हुआ है। थोक मुद्रा स्फीति दर (डब्ल्यूपीआई), जो अब २०२२-२३ पर आधारित है, जून में ९.८७ फीसदी के ऊंचे स्तर पर बनी रही, जबकि मई में यह ९.६८ फीसदी थी। उत्पादकों पर ईंधन और बिजली का सबसे ज्यादा दबाव बना रहा तथा इनमें मुद्रा स्फीति दर २७.४१ फीसदी दर्ज की गई, जो मई के २८.१८ फीसदी से थोडी ही कम है। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग ९० फीसदी आयात करता है। जून में सामानों के आयात की कीमत बढ़कर ७०.८ बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई, जो एक साल पहले लगभग ५४.१ बिलियन अमेरिकी डॉलर थी। जबकि, आयात की मात्रा में उस अनुपात में बढोतरी नहीं हुई। इससे पता चलता है कि कच्चे तेल की कीमतों (जो कुछ समय के लिए ११० डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चली गई थीं) के कारण बढी आयातित मुद्रा स्फीति ने कैसे पूरी अर्थव्यवस्था में कीमतों पर दबाव डाला है। टकराव के दौरान रुपये की कीमत में आई भारी गिरावट ने इन दबावों को और बढा दिया। हालांकि, विदेशी मुद्रा बाजार में आरबीआई के दखल से इस गिरावट को कुछ हद तक संभालने में मदद मिली।

परिवहन की श्रेणी पर और बारीकी से विचार करने की जरूरत है। जून में परिवहन संबंधी मुद्रा स्फीति मई के १.७५ फीसदी से बढ़कर ४.३१ फीसदी हो गई, जोकि दोगुने से भी ज्यादा है। वहीं, ङ्गसामानों के लिए परिवहन सेवाङ्क वाला उप-समूह ७.६३ फीसदी से बढ़कर ७.७० फीसदी के ऊंचे स्तर पर बना रहा। एक और अहम दबाव वाला क्षेत्र रेस्तरां और होटल रहे हैं। भले ही सरकार ने इस महीने की शुरुआत में कमर्शियल एलपीजी की कीमतों में थोडी कमी का एलान किया, लेकिन मई और जून में हुई भारी बढोतरी की भरपाई के लिए यह नाकाफी रही। उस दौरान दिल्ली में १९.२ किलोग्राम वाले कमर्शियल सिलेंडर की कीमत बढ़कर लगभग २,९३० रुपये हो गई थी, जिसके बाद इसमें मामूली कमी आई। पूरी प्रणाली पर इसका असर खाने-पीने की चीजों की कीमतों में भी साफ दिख रहा है, क्योंकि उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (सीएफपीआई) मई के ४.७८ फीसदी से बढ़कर ५.३२ फीसदी हो गया है।

Negotiable Instruments अधिनियम के मामलों के निस्तारण हेतु कछार में विशेष लोक अदालत आयोजित, ३१ मामलों का हुआ समाधान

प्रे.सं. सिलचर, २० जुलाई: जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए), कछार द्वारा १८ जुलाई २०२६ को परक्राम्य लिखत अधिनियम, १८८१ (Negotiable Instruments Act, 1881) के अंतर्गत लंबित मामलों के त्वरित निस्तारण के लिए विशेष लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लंबित मामलों की सुनवाई एवं निस्तारण के लिए तीन विशेष लोक अदालत पीठों का गठन किया गया था। विशेष लोक अदालत के दौरान विचाराधीन मामलों में से कुल ३१ मामलों का आपसी सहमति एवं सुलह के माध्यम से सफलतापूर्वक निस्तारण किया गया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि विशेष लोक अदालत का उद्देश्य न्यायालयों में लंबित मामलों का शीघ्र, सरल एवं सौहार्दपूर्ण समाधान सुनिश्चित करना है, जिससे पक्षकारों को कम समय और कम खर्च में न्याय मिल सके।यह जानकारी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कछार, सिलचर के सचिव द्वारा जारी एकप्रेस विज्ञप्ति में दी गई है।

आत्मनिर्भर भारत की अंतरिक्ष युग की ऐतिहासिक उड़ान

सौरभ वार्ष्णेय

भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि अपने नाम दर्ज कर ली है। देश के पहले निजी क्षेत्र द्वारा विकसित ऑर्बिटल रॉकेट 'विक्रम-१द्ध का सफल प्रक्षेपण भारतीय अंतरिक्ष यात्रा में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है। हैदराबाद स्थित निजी अंतरिक्ष कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित इस रॉकेट ने श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से सफल उडान भरते हुए छह पेलोड को लगभग ४५० किलोमीटर ऊँची निम्न पृथ्वी कक्षा में स्थापित किया। यह उपलब्धि केवल एक तकनीकी सफलता नहीं, बल्कि भारत की नवाचार क्षमता, निजी उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की सशक्त अभिव्यक्ति है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में ऐतिहासिक परिवर्तन

कई दशकों तक भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम मुख्यत: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के नेतृत्व में संचालित होता रहा। चंद्रयान, मंगलयान और आदित्य-एल१ जैसे मिशनों ने भारत को वैश्विक अंतरिक्ष शक्तियों की अग्रिम पंक्ति में खडा किया। किंतु बदलती वैश्विक परिस्थितियों और बढती व्यावसायिक मांगों को देखते हुए भारत सरकार ने निजी क्षेत्र के लिए अंतरिक्ष क्षेत्र के द्वार खोले। इसका उद्देश्य नवाचार, निवेश और प्रतिस्पर्धा को बढावा देना था।

विक्रम-१ की सफलता इस नीति की प्रभावशीलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इससे स्पष्ट हो गया है कि भारतीय निजी कंपनियाँ भी विश्वस्तरीय अंतरिक्ष तकनीक विकसित करने में सक्षम हैं।

विक्रम-१ की विशेषताएँ

विक्रम-१ एक अत्याधुनिक, तीन-चरणीय ठोस ईंधन आधारित ऑर्बिटल रॉकेट है, जिसके अंतिम चरण में ३ष्ठ-प्रिंटेड तरल इंजन का उपयोग किया गया है। इसका ढाँचा कार्बन-कॉम्पोजिट सामग्री से निर्मित है, जिससे इसका भार कम तथा दक्षता अधिक हो जाती है। यह लगभग ३५० किलोग्राम तक के छोटे उपग्रहों को निम्न पृथ्वी कक्षा में स्थापित करने की क्षमता रखता है।

मिशन के दौरान रॉकेट ने छह पेलोड को सफलतापूर्वक निर्धारित कक्षा में पहुँचाकर अपनी विश्वसनीयता सिद्ध की। यह सफलता भविष्य में व्यावसायिक उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं के लिए भारत को एक आकर्षक वैश्विक केंद्र बना सकती है।

आर्थिक और रणनीतिक महत्व आज

वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था तीव्र गति से विस्तार कर रही है। छोटे उपग्रहों की बढती मांग के कारण कम लागत वाले प्रक्षेपण यानों का महत्व लगातार बढ रहा है। विक्रम-१ की सफलता भारत को इस उभरते हुए बाजार में सशक्त प्रतिस्पधी बना सकती है।इस उपलब्धि से अनेक सकारात्मक परिणाम सामने आएँगे।भारतीय स्टार्टअप और निजी उद्योगों को नई संभावनाएँ मिलेंगी।

उपग्रह प्रक्षेपण की लागत में प्रतिस्पर्धात्मक कमी आएगी।उच्च तकनीक आधारित रोजगार और अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलेगा।

विदेशी ग्राहकों के लिए भारत एक विश्वसनीय लॉन्च सेवा प्रदाता के रूप में उभरेगा।अंतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत अभियान को नई गति मिलेगी। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत - अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी कंपनियों की भूमिका अमेरिका और कुछ अन्य देशों में पहले से स्थापित रही है। भारत में विक्रम-१ की सफलता इस दिशा में निर्णायक कदम है। इससे भारत उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है जहाँ निजी क्षेत्र ने सफल ऑर्बिटल लॉन्च क्षमता का प्रदर्शन किया है। यह उपलब्धि भारतीय वैज्ञानिक प्रतिभा और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की वैश्विक स्वीकार्यता को भी मजबूत करती है।

चुनौतियाँ भी कम नहीं - हालाँकि यह सफलता अत्यंत प्रेरणादायक है, लेकिन निजी अंतरिक्ष उद्योग के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं। वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विश्वसनीयता, सुरक्षा मानकों का पालन, निवेश की निरंतर उपलब्धता तथा अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों का विश्वास बनाए रखना आसान नहीं होगा। सरकार, निजी कंपनियों के बीच प्रभावी सहयोग इस क्षेत्र की दीर्घकालिक सफलता की कुंजी रहेगा।विक्रम-१ का सफल प्रक्षेपण केवल एक रॉकेट की उडान नहीं, बल्कि भारत की वैज्ञानिक क्षमता, नवाचार, उद्यमिता और आत्मविश्वास की नई उडान है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि भारत अब केवल सरकारी संस्थानों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि निजी नवाचार के बल पर भी अंतरिक्ष क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर है। यदि यही गति, नीति समर्थन और तकनीकी उत्कृष्टता बनी रही, तो आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का प्रमुख केंद्र बन सकता है। विक्रम-१ ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया है कि भारत का भविष्य केवल धरती तक सीमित नहीं, बल्कि अंतरिक्ष की असीम संभावनाओं तक विस्तृत है।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक है।ॉ

चातुर्मासः आत्म जागरण, संयम और आध्यात्मिक साधना का पर्व

● वीरेन्द्र कुमार जैन

भारतीय संस्कृति में अनेक पर्व और अनेक उत्सव मनाए जाते हैं जिनका उद्देश्य आत्मा का उत्थान और जीवन को परिस्कार करना है। ऐसा ही एक पवित्र अवसर है चातुर्मास। चातुर्मास दो शब्दो से बना है चतुर अर्थात चार और मास अर्थात महिना। यह चार महिनों की अवधि वर्षा ऋतु में आती है। वर्षा ऋतु में धरती पर असंख्य सूक्ष्म जीव जंतु की उत्पति होती है। जैन धर्म में इस अवधि का महत्वपूर्ण स्थान है। जैन धर्म का मूल सिद्धान्त हैं- अहिंसा। जैन साधु इस अवधि में निरंतर विहार न करके एक ही स्थान पर निवास करते हैं । इसे वर्षावास भी कहा जाता है। इसमें सुक्ष्म जीवों की रक्षा होती है और श्रद्धालुओं को भी लम्बे समय तक गुरु का सान्निध्य प्राप्त होता है।

चातुर्मास का धार्मिक महत्व के साथ आध्यात्मिक महत्व भी है। और इससे नैतिक मूल्यों को भी शक्ति मिलती है। जैन धर्म में चातुर्मास आत्मशुद्धि, तप, संयम, स्वाध्याय और धर्म साधना का एक विशेष अवसर है। इन चार मास में श्रद्धालु नियमित रुप से मन्दिर जाते हैं। वे समायिक, प्रतिक्रमन, पूजा, ध्यान और स्वाध्याय करते है। इस समय अनेक लोग उपवास, एकासन, बेला, उपधान तप आदि का पालन करते हैं।

वास्तव में चातुर्मास का मुख्य उद्देश्य बाहरी जीवन से ज्यादा आंतरिक जीवन का विकास है। यह वह अवसर है जब लोग अपनी आत्मा का कल्याण के लिए में क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषायों को कम करने का प्रयास करते हैं।

यह वह अवसर है जब हम अपने आंतरिक दोषो का निरक्षण करते है और उसे दूर करने का संकल्प लेकर आत्मशुद्धि की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं।

जैन परंपरा में चातुर्मास का एक महत्वपूर्ण पर्व माना गया है। चातुर्मास के दिनों में आगमों, तत्वज्ञान, आचार, साहित्य तथा अनेक दूसरे प्रेरणादायक ग्रंथो का अध्ययन किया जाता है। इनके द्वारा पाये गए ज्ञान से सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र की भावना मजबूत होती है। इस प्रकार चातुमार्स समाज में नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है। इस दौरान सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, करुणा विनम्रता और सेवा जैसे गुणो का विकास होता है। प्रवचन और सामूहिक स्वाध्याय के माध्यम से बच्चों और युवाओं में चरित्र निर्मान की भावना विकसित होती है। परिवारों में एक धार्मिक वातावरण बनता है और समाज में एकता मजबूत होती है।

चातुर्मास तप और संयम का विशेष काल है। कई लोग भोजन में संयम रखते हैं, अनावश्यक वस्तुओं का त्याग करते हैं। समय का सदुपयोग करते हैं तथा अनुशासन का अभ्यास करते हैं। तप केवन भोजन का त्याग नहीं है बल्कि मन, वचन और माया की शुद्धि का साधन है।

चातुमार्स हमें प्रकृति संवेदनशील भी बनाता है। वर्षा ऋतु में अनावश्यक यात्रा से बचना, जल, वनस्पति और पर्यावरण के प्रति करुणा और किसी भी जीव के अस्तित्व का सम्मान करना है। इससे पर्यावरण के संरक्षण की भावना जागृति होता है।

वर्तमान समय में चातुर्मास की प्रासंगिकता बहुत बढ़ गई है। आज का जीवन अत्यन्त तनावपूर्ण हो गया है।

प्रतिस्पर्धा उपभोगवाद और भाग दौड़ से भरा हुआ है। ऐसे समय में चातुर्मास हमें अपने अन्दर झांकने की प्रेरणा देता है। यह हमें संयमित जीवन, सीमित आवश्यकताएँ, साकारात्मक सोच, नैतिक आचरण और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाता है। अगर आज का समाज इस चातुर्मास के दौरान प्राप्त की गई शिक्षाओं को अपनाएँ तो व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामुहिक जीवन अधिक शांत, संतुलित और सुखी बन सकता है।

हिन्दु धर्म में भी चातुमार्स अत्यंत पवित्र माना गया है। ऐसी मान्यता है कि इस अवधि में भगवान विष्णु क्षीर सागर में योग निद्रा में रहते है। यह समय साधना जप, व्रत दान, स्वाध्याय और आत्म संयम के लिए श्रेष्ठ माना गया है। वर्षा ऋतुमें ऋषि-मुनि एक स्थान पर रहकर लोगों को धर्मोपदेश देते थे। इन दिनों हिन्दु धर्म के अनुयायी प्रतिदिन पूजा-पाठ और भगवत विष्णु, शिव तथा देवी की आराधना करते हैं। गीता, रामायण, भागवत आदि ग्रंथों का अध्ययन करते है। एकादशी व्रत, सोमवार व्रत तथा अन्य धार्मिक वर्तो का पालन करते हैं। सात्विक भोजन और इंद्रिय संयम का पालन करते है।

इसलिए चातुर्मास केवल चार महीनों का अनुष्ठान नहीं है, बल्कि जीवन श्रेष्ठ बनाने का अभियान है। यह आत्मशुद्धि, संयम, तप स्वाध्याय सेवा, करुणा और अहिंसा का संदेश देता है।

आज का युग विज्ञान, तकनिकी और सुविधाओं का युग है, लेकिन विडंबना यह है कि जितनी सुविधाएँ बढ़ी हैं उतना ही तनाव भी बढ़ा है। जीवन की भाग दौड़, प्रतिस्पर्धा आर्थिक दबाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ, सोशल मीडिया का प्रभाव और भविष्य की चिंता ने मनुष्य के मन को अशांत बना दिया है।

चातुमार्स ही सिखाता है कि सच्चा धर्म केवल पूजा या कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि अपने विचारों, वाणी और व्यवहार को पवित्र बनाना है। यदि हम चातुमार्स की भावना को अपने दैनिक जीवन में उतारे, तो न केवल हमारा व्यक्तिगण जीवन ही नहीं पूरा समाज अधिक नैतिक, शान्तिपूर्ण और करुणामय बन सकता है।

भगवान महावीर का संदेश था कि अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, क्षमा और आत्मसंयम केवल पढ़ने की बाते नहीं, बल्कि जीने के मूल्य हैं। जब हम इन मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारते हैं तभी धर्म हमारे जीवन का अनुभव बनता है। हम इस चातुर्मास में प्रवचन तक सीमित न रहें, बल्कि एक सद्गुण को अपने जीवन में उतारने का संकल्प ले।

धर्म के खूबसुरत पल वे नहीं जिन्हें केमरे में कैद किया जाय! धर्म के खुबसुरत पल वे हैं जो आत्मा पर अमिट संस्कार बनकर अंकित हो जाएँ।

हम सभी धर्म को केवल मंन्दिर तक सीमित न रखें, बल्कि अपने विचारों, वाणी और व्यवहार में उतारे। यही चातुर्मास की सच्ची साधना है और यही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि।

धर्म छूटते ही आदमी संवेदनहीन पशु

सर्वेश तिवारी श्रीमुख

जानते हैं, जब कोई व्यक्ति धर्म बदलता है तो वस्तुतः वह 'धर्म' को छोडता है। स्पष्ट कहें तो वह धर्म को छोड़कर अधर्म को अपनाता है। उसके बाद वह जो कर दे, कम है।कुछ लोगों को लगता है कि जीवन में धर्म सबसे महत्वपूर्ण वस्तु नहीं है, बल्कि धन, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, पढाई, नौकरी आदि अधिक आवश्यक है। वे नहीं जानते कि धर्म छूटते ही आदमी संवेदनहीन पशु हो जाता है। उसका आचरण मनुष्य के समान रह ही नहीं जाता।एक बोरा चावल के बदले अपना धर्म बेंच देने वाले समझ भी नहीं पाते कि उन्होंने अपना क्या क्या दे दिया है। माँ, बाप, सम्बन्ध, संवेदना, यहाँ तक कि अपने राष्ट्र अपनी मातृभूमि के प्रति निष्ठा भी उस ठेकेदार के चरणों में रख देनी पडती है।सोच कर देखिये, क्या सचमुच इस लडके के अंदर अपनी माँ के लिए थोडी सी भी श्रद्धा नहीं रही होगी? श्रद्धा न भी हो तो क्या अपना कर्तव्य भी याद नहीं होगा? नए सम्प्रदाय के ठेकेदार ने अपने गैंग में भती करते समय नाम भले नया दे दिया हो पर नई मां तो नहीं ही दी होगी। मां तो अब भी वही होगी न? फिर उसने मां का अंतिम संस्कार करने से कैसे इंकार कर दिया?असल में उसकी सामर्थ्य नहीं कि वह अपने ठेकेदार की मजी के खिलाफ एक कदम भी जा सके। वह अब गुलाम हो चुका है। मां मरे, बाप मरे या देश मरे, उसे बोलने या रोने तक का अधिकार नहीं। धीरेंद्र प्रताप सिंह से डेविड बना हर व्यक्ति ऐसा ही होता है। वह किसी का नहीं होता, किसी का भी नहीं... हर अधमी का अंतिम सत्य यही है। (उर्वशी)

नेताओं की मजबूरी पर वफादारी का चोला

● संजय सक्सेना

राजनीति में वफादारी और मजबूरी के बीच की लकीर अक्सर इतनी पतली होती है कि आम आदमी तो क्या, खुद नेता भी भूल जाते हैं कि वे किस तरफ खड़े हैं. तृणमूल कांग्रेस के तीन सांसदों शत्रुघ्न सिन्हा, कीर्ति आजाद और बाबुल सुप्रियो की कहानी इसी सच्चाई की एक जीती-जागती मिसाल है. पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में ममता बनजी की पाटी की करारी हार के बाद जब पाटी के करीब बीस सांसद बगावत पर उतर आए और मोदी सरकार के साथ खड़े होने का एलान कर दिया, तब यही तीनों नेता दीदी यानी ममता बनजी की वफादारी का ढिंढोरा पीटने में लगे हैं. शत्रुघ्न सिन्हा ने बयान दिया कि वे ममता जी के साथ हैं और हमेशा टीएमसी में ही रहेंगे. कीर्ति आजाद ने भी संकट की इस घड़ी में ममता बनजी का हाथ थामे रखने का एलान किया. लेकिन जो बात इन बयानों के पीछे छिपी है, वह यह है कि इन नेताओं के पास फिलहाल कोई और चारा है भी नहीं. सबसे पहले बात शत्रुघ्न सिन्हा की. शत्रुघ्न सिन्हा ने भले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह के खिलाफ जाकर भाजपा छोड़ी थी, लेकिन भाजपा में आज भी उनके कई पुराने मित्र मौजूद हैं. यही कारण है कि जब टीएमसी में तूफान आया तो उनकी चुप्पी ने सबको चौंकाया. वे न बागी खेमे में नजर आए, न ममता के साथ खुलकर. लेकिन जब यह साफ हो गया कि भाजपा उनके लिए अपने दरवाजे खोलने के मूड में नहीं है, तो उनकी कथित वफादारी की घोषणा सामने आ गई.

बता दें, शत्रुघ्न सिन्हा लंबे समय तक भाजपा के चमकते सितारे रहे. अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में वे केंद्रीय मंत्री रहे. लेकिन धीरे-धीरे पाटी में उनकी पूछ कम होती गई. नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जब भाजपा ने नई करवट ली तो पुरानी पीढ़ी के कई नेताओं को हाशिये पर धकेल दिया गया. शत्रुघ्न सिन्हा पाटी में घुट-घुटकर रहते रहे और अंदर ही अंदर असंतोष पकता रहा. २०१९ के लोकसभा चुनाव से पहले उन्होंने भाजपा से नाता तोड़ लिया और कांग्रेस के टिकट पर पटना साहिब से चुनाव लड़े, लेकिन हार गए. इसके बाद उनका राजनीतिक सफर भटकाव का शिकार रहा और अंततः वे तृणमूल कांग्रेस में आ गए. २०२४ के लोकसभा चुनाव में शत्रुघ्न सिन्हा आसनसोल से करीब साठ हजार वोटों से जीते. लेकिन यह जीत उनकी अपनी नहीं, ममता बनजी की लहर थी. अब जब वही लहर उतर रही है, तो उनके पास लौटने के लिए कोई ठिकाना नहीं है. कीर्ति आजाद की कहानी तो और भी दिलचस्प है. दिसंबर २०१५ में दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ में कथित अनियमितताओं तथा भ्रष्टाचार को लेकर तत्कालीन केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली को खुले तौर पर निशाना बनाने के लिए उन्हें भाजपा से निलंबित कर दिया गया था. वे २०१८ में कांग्रेस में शामिल हो गए थे. कांग्रेस ने उन्हें २०१९ में धनबाद से टिकट दिया, लेकिन वहां भी उन्हें मुंह की खानी पड़ी. इसके बाद २०२४ में वे तृणमूल कांग्रेस के जरिये बर्धमान-दुर्गापुर से लोकसभा पहुंचे. कीर्ति आजाद इस सीट से करीब १४ हजार वोटों से जीते. इस तरह एक ऐसे नेता जो कभी भाजपा के दिग्गज क्रिकेटर-सांसद हुआ करते थे, उनकी राजनीतिक यात्रा भाजपा से कांग्रेस और कांग्रेस से टीएमसी तक आ पहुंची. अब भाजपा उनसे दूरी बनाए हुए है और कांग्रेस भी उन्हें वापस लेने की स्थिति में नहीं है, इसलिए मजबूरी यही है कि ममता की डूबती नैया को थामे रखो और उसे वफादारी का नाम दो.

बाबुल सुप्रियो की कहानी इन दोनों से थोड़ी अलग लेकिन उसी धागे में पिरोई हुई है. वे आसनसोल से दो बार सांसद रहे और नरेंद्र मोदी सरकार में केंद्रीय राज्यमंत्री भी रहे. लेकिन २०२१ के विधानसभा चुनाव के बाद जब भाजपा को बंगाल में करारी हार मिली और पाटी के भीतर आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हुआ, तो बाबुल सुप्रियो ने भी भाजपा से मुंह मोड़ लिया. तत्कालीन केंद्रीय मंत्री बाबुल सुप्रियो विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद टीएमसी में शामिल होने वाले नेताओं में शामिल थे. तृणमूल ने उन्हें बालीगंज विधानसभा उपचुनाव में उतारा और वे जीत भी गए. लेकिन विधायक बनने के बाद भी उनकी राजनीतिक हैसियत वही नहीं रही जो कभी केंद्रीय मंत्री के रूप में थी. अब जब टीएमसी खुद संकट में है, तो भाजपा की ओर उनकी नजर स्वाभाविक रूप से जाती है, लेकिन भाजपा उन्हें पाटी में वापस लेने की कोई इच्छा नहीं रखती. उधर, पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद से तृणमूल कांग्रेस के भीतर अब तक का सबसे बड़ा और भयंकर 'युद्ध' छिड़ा हुआ है. टीएमसी के बीस सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से मिलकर उन्हें एक पत्र सौंपा है जिसमें अलग गुट बनाने की सूचना देते हुए लोकसभा में अलग बैठने की जगह देने की मांग की गई है. दलबदल विरोधी कानून से बचने के लिए लोकसभा में कम से कम उन्नीस सांसदों का समर्थन आवश्यक है. राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि टीएमसी सांसदों का समर्थन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को मिलता है, तो सरकार के लिए परिसीमन और एक देश-एक चुनाव जैसे महत्वपूर्ण विधेयकों को आगे बढ़ाना आसान हो सकता है. बागी गुट अपने कुनबे को बढ़ाने के लिए लगातार सांसदों का समर्थन जुटा रहा है.

इस पूरे घटनाक्रम में यह तीन नेता एक अजीब कशमकश में फंसे हुए हैं. एक तरफ बागी खेमा है जो भाजपा का दामन थामने की तैयारी कर रहा है, दूसरी तरफ ममता बनजी का खेमा है. शत्रुघ्न सिन्हा, कीर्ति आजाद और बाबुल सुप्रियो न उस पार जा सकते हैं, न इस पार रह सकते हैं. बागी खेमे के साथ जाने का मतलब होगा भाजपा के दरवाजे पर दस्तक देना, लेकिन भाजपा उनके लिए वह दरवाजा खोलने को तैयार नहीं है. ऐसे में ममता के साथ बने रहना इनकी मजबूरी है, लेकिन यह तीनों इसे वफादारी का नाम देकर अपनी पीठ थपथपा रहे हैं. बहरहाल, उक्त तीन के अलावा तृणमूल कांग्रेस में और भी कई ऐसे नेता हैं जिनके लिए भाजपा के दरवाजे बंद हैं. महुआ मोइत्रा, सौगात रॉय, और सायोनी घोष जैसे नाम टीएमसी के उन चेहरों में शामिल हैं जो भाजपा के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकते. महुआ मोइत्रा का राजनीतिक और वैचारिक रुख भाजपा के एकदम विपरीत रहा है और वे लगातार केंद्र सरकार पर हमलावर रहती हैं. सौगात रॉय वामपंथी झुकाव वाले वरिष्ठ नेता हैं जिनका भाजपा से कोई तालमेल कभी नहीं बैठा. इनके अलावा वे टीएमसी विधायक और नेता जो भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे हुए हैं, उनके लिए भी भाजपा की जगह तंग है. गौरतलब हो, राजनीति का यह खेल बड़ा निर्मम होता है. जब तक हवा अनुकूल रहती है, तब तक दावेदारी होती है. जब हवा पलट जाती है, तब मजबूरियां सामने आती हैं और उन्हें सिद्धांत का जामा पहना दिया जाता है. शत्रुघ्न सिन्हा, कीर्ति आजाद और बाबुल सुप्रियो तीनों ने अपनी-अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा के चलते भाजपा को छोड़ा. तीनों ने यह भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन वापसी का रास्ता बंद हो जाएगा. आज वे ममता बनजी की वफादारी की बात करते हैं, लेकिन असल में यह वफादारी नहीं, एक सियासी मजबूरी है जिसने वफादारी का चोला ओढ़ लिया है. जो नेता घुट-घुटकर पाटी में बने रहते हैं और मन मसोसकर बयानबाजी करते हैं, वे वफादार नहीं, मजबूर होते हैं. फर्क बस इतना है कि यह मजबूरी कभी-कभी इतनी सफाई से वफादारी का रूप ले लेती है कि खुद नेता को भी भ्रम हो जाता है.

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

असम एनआरसी से बाहर हुए लोगों की ...

सुनवाई के दौरान पीठ ने नोटिस जारी करने का निर्देश देते हुए इस याचिका को पहले से लंबित संबंधित याचिका के साथ संलग्न (टैग) करने का आदेश दिया।सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार के अलावा असम सरकार और एनआरसी के राज्य समन्वयक कार्यालय सहित अन्य प्रतिवादियों से भी जवाब मांगा है।उल्लेखनीय है कि असम में वास्तविक भारतीय नागरिकों की पहचान के उद्देश्य से तैयार की गई अंतिम राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) ३१ अगस्त २०१९ को प्रकाशित की गई थी। अंतिम सूची में १९,०६,६५७ आवेदकों के नाम शामिल नहीं किए गए थे।एनआरसी राज्य समन्वयक कार्यालय के अनुसार, कुल ३,३०,२७,६६१ लोगों ने एनआरसी में शामिल होने के लिए आवेदन किया था। इनमें से ३,११,२१,००४ लोगों के नाम अंतिम सूची में शामिल किए गए, जबकि १९,०६,६५७ लोगों को सूची से बाहर रखा गया।अपनी याचिका में असम स्टेट जमीयत उलेमा ने न्यायालय से यह भी अनुरोध किया है कि अंतिम एनआरसी में जिन लोगों के नाम शामिल हैं, उन्हें नागरिकता अधिनियम, १९५५ की धारा १४ए तथा नागरिकता नियम, २००३ के नियम १३ के तहत तत्काल राष्ट्रीय पहचान पत्र जारी करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया जाए।संगठन ने यह भी मांग की है कि अंतिम एनआरसी से बाहर किए गए सभी व्यक्तियों के लिए अपील प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ करने का निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिया जाए।

असम बाढ.: एनडीआरएफ ने गले तक पानी में ....

युवती ने एनडीआरएफ को बताया कि पास में तीन महिलाएं और फंसी हुई हैं, जो तेज बहाव के बीच केले के पेडों को पकडक़र अपनी जान बचाने का प्रयास कर रही हैं। सूचना मिलते ही टीम ने तुरंत तलाशी अभियान चलाया और तीनों महिलाओं को भी सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

इनमें एक बुजुर्ग महिला लंबे समय तक ठंडे बाढ.के पानी में रहने के कारण हाइपोथर्मिया (शरीर का तापमान सामान्य से काफी कम हो जाना) की शिकार हो गई थीं। एनडीआरएफ के चिकित्सकीय दल ने मौके पर ही उन्हें प्राथमिक उपचार (पीएचटी) उपलब्ध कराया। इसके बाद सभी पांचों लोगों को सुरक्षित राहत केंद्र पहुंचाया गया, जहां से बुजुर्ग महिला को आगे के उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया।एनडीआरएफ ने बताया कि समय पर मिली सूचना, बचाव दल की त्वरित कार्रवाई, पेशेवर दक्षता और विषम परिस्थितियों में दिखाए गए साहस के कारण एक बडी त्रासदी टल गई। अभियान के दौरान टीम ने अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में पांच लोगों की जान बचाकर अपनी प्रतिबद्धता और दक्षता का परिचय दिया।एनडीआरएफ के अनुसार, जोरहाट जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के साथ समन्वय और स्थानीय प्रशासन के सहयोग से राहत एवं बचाव अभियान लगातार जारी है। बाढ.प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने और उन्हें राहत शिविरों तक पहुंचाने का कार्य युद्धस्तर पर किया जा रहा है

मंत्री केशव महंता ने जोरहाट में बाढ.के ....

रेवेन्यू सर्कल ऑफिसर और जलि़ा प्रशासन के दूसरे सीनियर अधिकारी भी शामिल हुए, जब उन्होंने जलि़े भर में बाढ.से निपटने के काम का रिव्यू किया।मंत्री ने सेलेनघाट हायर सेकेंडरी स्कूल समेत राहत कैंपों का निरीक्षण किया और टीटाबोर रेवेन्यू सर्कल के तहत नारायणपुर पनबारी टी एस्टेट के डेली मार्केट कॉम्प्लेक्स में शरण लिए हुए बाढ.प्रभावित परिवारों से मुलाकात की। विस्थापित निवासियों के साथ बातचीत के दौरान, उन्होंने अधिकारियों को सभी राहत कैंपों में साफ पीने का पानी, खाना, बच्चों का पोषण, हेल्थकेयर सेवाएं और जानवरों के लिए चारे की बिना रुकावट सप्लाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

महंत ने जोरहाट सर्किट हाउस और टीटाबोर सब-डिविजनल ऑफिस में अलग-अलग रिव्यू मीटिंग की अध्यक्षता भी की, जहां उन्होंने बाढ.प्रबंधन के उपायों, बचाव कार्यों और राहत वितरण का आकलन किया। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को मिलकर काम करने और बाढ.का पानी कम होने के बाद नुकसान का पूरी तरह से आकलन करने का निर्देश दिया।अपने दौरे के दौरान, मंत्री ने १६ साल की सोनिया पहाडि़या और १५ साल की सुष्मिता मिर्धी के दुखी परिवारों से भी मुलाकात की, जिनकी नारायणपुर पनबारी टी एस्टेट इलाके के बोरजन में बाढ.के पानी में बह जाने से जान चली गई थी।मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा और असम सरकार की ओर से संवेदना जताते हुए, महंत ने दोनों मृतक लडकियों के परिवारों को ४-४ लाख रुपये की एक्स-ग्रेसिया मदद देने का ऐलान किया। इसके अलावा, उन्होंने १५ साल की बबीता छेत्री के परिवार से भी मुलाकात की, जो उसी घटना में घायल हो गई थी और उसका जोरहाट मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। मंत्री ने परिवार को भरोसा दिलाया कि असम सरकार उसके इलाज का पूरा खर्च उठाएगी।

महंत ने यह भी ऐलान किया कि बेघर और बुरी तरह प्रभावित परिवारों को कपडे.और घर के जरूरी बर्तन खरीदने के लिए सरकारी नियमों के मुताबिक पैसे की मदद मिलेगी। उन्होंने लोगों से शांत रहने, प्रशासन के साथ सहयोग करने और घबराने से बचने की अपील की, क्योंकि पूरे जिले में राहत और पुनर्वास के काम जारी हैं।

धोलाई थाना पुलिस की बडी सफलता: ऑटो-रिक्शा के ....

कई लाख रुपये बताई जा रही है। पुलिस ने मामले की जांच शुरूकर दी है। जांच एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि मादक पदार्थ कहां से लाया गया था, इसे किसे पहुंचाया जाना था और इस तस्करी नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं।बराक घाटी में पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों द्वारा लगातार मादक पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। इसके बावजूद तस्कर नए-नए तरीकों से नशीले पदार्थों की तस्करी का प्रयास कर रहे हैं। ऑटो-रिक्शा के गुप्त चैंबर में मादक पदार्थ छिपाकर ले जाने का यह मामला तस्करों की इसी नई रणनीति का एक उदाहरण है।मादक पदार्थ केवल एक व्यक्ति का जीवन नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करता है। ऐसे में मादक पदार्थों के खिलाफ पुलिस प्रशासन के साथ-साथ समाज के प्रत्येक जागरूक नागरिक की सक्रिय भूमिका भी आवश्यक है।

बराक घाटी में स्थायी हाईकोर्ट बेंच की मांग....

प्रक्रिया लगभग पूरी हो चुकी है और मुख्य न्यायाधीश की स्वीकृति मिलने के बाद शेष प्रक्रिया आगे बढाई जा सकेगी।ध्रुव कुमार साहा ने बताया कि प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य न्यायाधीश के साथ लगभग एक घंटे २० मिनट तक विस्तृत चर्चा की और उन्हें एक विजन डॉक्यूमेंट भी सौंपा। मुख्य न्यायाधीश ने समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए इस विषय को प्रशासनिक समिति के समक्ष रखने का आश्वासन दिया।समिति की मुख्य मांग बराक घाटी में गुवाहाटी हाईकोर्ट की स्थायी बेंच की स्थापना है। हालांकि, स्थायी बेंच की स्थापना में यदि समय लगता है, तो अंतरिम व्यवस्था के रूप में सर्किट बेंच की स्थापना का भी समिति स्वागत करेगी।कमेटी के नेताओं ने बताया कि संगठन का गठन जनवरी २०२६ में किया गया था और १२ जनवरी को पहली बार ज्ञापन सौंपा गया। अब तक १५ हजार से अधिक लोगों के हस्ताक्षर जुटाए जा चुके हैं। समिति का दावा है कि बराक घाटी के १५० से अधिक संगठन, स्वयंसेवी संस्थाएं और विभिन्न प्रतिष्ठान इस मांग के समर्थन में सामने आए हैं।अधिवक्ता धर्मानंद देव ने बताया कि प्रस्तावित हाईकोर्ट बेंच के लिए कम से कम ४० एकड.भूमि के साथ आवश्यक आधारभूत संरचना और अन्य सुविधाओं की जरूरत होगी। उन्होंने दावा किया कि मुख्यमंत्री ने बरखला के विधायक किशोर नाथ को उपयुक्त भूमि चिह्नित करने का निर्देश भी दिया है।समिति के नेताओं का मानना है कि हालिया बैठकों के बाद बराक घाटी में स्थायी हाईकोर्ट बेंच की लंबे समय से चली आ रही मांग के आंदोलन ने अपने लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढाया है।इस अवसर पर कमेटी के उपाध्यक्ष शांतनु नायक, अधिवक्ता देवमिता चक्रवती, तुहिना शर्मी, ज्योतिर्मय नाथ तथा पूर्व प्राध्यापक डॉ. विभास देव सहित अन्य उपस्थित थे।

दिल्ली की सडक़ों पर उतरे हजारों युवाओं ने कैसे ....

लिखित याचिका दी गई. मैंने सभी प्रदर्शनकारियों से अनुरोध किया कि वे अपने धरने को समाप्त करें और सामान्य स्थिति बहाल करने में प्रशासन की मदद करें.'हालांकि युवाओं के इतने बडे.प्रदर्शन के बावजूद सीजेपी की मुख्य मांग को अभी तक केंद्र सरकार ने स्वीकार नहीं किया है. लेकिन इस बीच ये सवाल है कि आखिर युवाओं के सडक़ पर उतरने का हासिल क्या रहा?इस बात का जवाब हमने आंदोलन पर नजर रखने वाले पत्रकार और एक्सपर्ट्स से खोजने की कोशिश की है.आंदोलन का समर्थन कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता योगेंद्र यादव ने सोमवार को जंतर-मंतर पर कहा, 'आज जंतर-मंतर पर मैं जिस नई पीढी को देख रहा हूं, उससे मेरा विश्वास और मजबूत हुआ है. ये युवा सिर्फ.अपने लिए नहीं लड.रहे. वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए लड.रहे हैं जो न्यायपूर्ण हो, ऐसी अर्थव्यवस्था के लिए जो रोजगार दे, और ऐसी राजनीति के लिए जो जनता के प्रति जवाबदेह हो.'इमेज कैप्शन,इस आंदोलन पर नजर रख रहे कुछ विश्लेषकों का मानना है कि युवाओं का प्रदर्शन मोदी सरकार के लिए बडी परेशानी बन सकता है इसी बात को आगे बढाते हुए स्मिता शर्मी ने कहा कि सोमवार के प्रदर्शन की सबसे बडी बात यह थी कि किसी ने भी इस बात का अनुमान नहीं लगाया था कि इतनी बडी तादाद में युवा सडक़ पर उतरेंगे.स्मिता शर्मी सोमवार के प्रदर्शन को नेतृत्वविहीन आंदोलन के तौर पर भी देख रही हैं.उन्होंने कहा, 'इंटरनेट बंद था. सीजेपी के नेता अपनी बातों को आगे नहीं पहुंचा पा रहे थे. मेट्रो स्टेशन बंद थे. मैसेज पहुंचना आसान नहीं था. आंदोलन शिक्षा का था, लेकिन बात बढक़र महंगाई, बेरोजगारी और वोट चोरी तक हुई. ये बात १२वीं कक्षा में पढने वाले बच्चों से लेकर कॉलेज में पढने वाले बच्चों ने की, ये अपने आप में बहुत ही ज्यादा यूनिक बात रही.'इस आंदोलन से सरकार के लिए चुनौती आने वाले वक्त में कितनी बढने वाली है?, इस सवाल पर स्मिता शर्मी ने कहा, 'अगर सरकार इस प्रदर्शन से कोई मैसेज नहीं लेती है तो ये उसकी बडी गलती होगी. क्योंकि युवाओं ने ये साफ.किया कि वो संसद मार्च के लिए बेताब थे. सीजेपी अगर उन्हें संसद मार्च से रोकती तो भी जंतर-मंतर पर हजारों की भीड.संसद मार्च करती.''उनको लाठियों से मारा गया. बावजूद उसके वो वापस आ रहे थे, उनका सामना कर रहे थे. सरकार के लिए एक गंभीर मैसेज है कि एक निराशा है जिसे अगर नहीं सुना जाता है तो आज जिस तरह से एक गुब्बारा फटा है. वो आने वाले दिनों में फिर से भी फट सकता है.'वरिष्ठ पत्रकार हेमंत अत्री भी स्मिता शर्मी की बात को आगे बढाते हुए कहते हैं कि युवाओं का यह प्रदर्शन आने वाले दिनों में मोदी सरकार के लिए परेशानी का सबब बनने वाला है.उन्होंने कहा, 'इस प्रदर्शन का जो हासिल है वो ये है कि मोदी सरकार अब तक इस देश के लोगों को फॉर ग्रांटेड मान के चल रही थी, उसका वो भ्रम टूट गया है. ऐसा नहीं है कि लोग आए और चुपचाप चले गए. उन्होंने दिखाया कि इस देश में जनतंत्र जो है मजबूत है, उसकी जडें.मजबूत हैं. सरकार उसे कमजोर नहीं कर सकती.''किसी भी देश के लिए युवाओं की भूमिका ना केवल वर्तमान बल्कि भविष्य के हिसाब से भी बहुत ही महत्वपूर्ण और निर्णायक हती है. फिर चाहे सरकारों का चुनना हो या फिर सरकार का बदलाव.''सरकार के लिए ये अलार्मिंग बेल है. वो लंबे समय जनता को अनदेखा नहीं कर पाएंगे. सरकार को जवाबदेही तय करनी पडेग़ी वरना जनता सडक़ों पर आना भूली नहीं. इसका असर लंबे समय में दिखाई देगा. हमारा लोकतंत्र हमें खैरात में नहीं मिला है, हमने उसे हासिल किया है. और जो दिल्ली की सडक़ों पर दिखाई दिया, वही हमारे लोकतंत्र की शक्ति है.'हेमंत अत्री कहते हैं, 'सरकार को लगता है कि हिंदू-मुस्लिम के नाम पर उसकी राजनीति चल सकती है. तो ऐसा नहीं होने वाला. जनता मूल मुद्दों पर वापस आ रही है और यह युवाओं का इस तरह से आगे आना सरकार के लिए बडे.खतरे की घंटी है. उसे अपना कामकाज सुधारना होगा.'

डिगबोई पुलिस स्टेशन के पास दिनदहाडे.महिला से ५ लाख रुपये का सोने का हार लूटा गया

डिगबोई (अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: एक चौंकाने वाली घटना में, जिसने लोगों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं, मंगलवार को असम के डिगबोई शहर में दिनदहाडे.मोटरसाइकिल सवार बदमाशों ने एक महिला से करीब ५ लाख रुपये का सोने का हार लूट लिया। यह घटना शहर के सबसे व्यस्त कमर्शियल रास्तों में से एक पर, डिगबोई पुलिस स्टेशन से मुश्किल से ५०० मीटर दूर हुई।पुलिस के मुताबिक, पीडति सरोजा शर्मा, जो डिगबोई पुलिस स्टेशन के तहत छड एरिया की रहने वाली थीं और स्वर्गीय दीपक शर्मा की विधवा थीं, इंडियन बैंक में बैंकिंग का काम खत्म करके न्यू मार्केट-AOD रोड पर एक थ्री-व्हीलर स्टैंड के पास इंतजार कर रही थीं, तभी हमलावरों ने हमला कर दिया। घटना के बारे में बताते हुए, शर्मा ने कहा कि उन्हें शुरू में लगा कि इसमें सिर्फ एक मोटरसाइकिल शामिल थी, लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि दो मोटरसाइकिलों पर सवार चार लोगों ने इस अपराध को अंजाम दिया है। कहा जा रहा है कि हमलावरों में से एक ने उसका ध्यान भटकाने और उसे डराने की कोशिश की, जबकि दूसरे ने तेजी से उसके गले से सोने का हार छीन लिया, जिसके बाद वे कुछ ही सेकंड में मौके से भाग गए। परिवार वालों ने बताया कि चोरी हुए हार का वजन ३० ग्राम से ज़्यादा था और उसकी कीमत करीब ५ लाख रुपये थी। पुलिस नo FIR दर्ज कर ली है और जांच शुरूकर दी है। अजऊइलाके में कई जगहों से उउढत फुटेज की जांच की जा रही है ताकि संदिग्धों की पहचान की जा सके, क्राइम में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिलों का पता लगाया जा सके और घटना से पहले और बाद में उनकी मूवमेंट का पता लगाया जा सके।इस लूट से लोगों में चिंता बढ.गई है, क्योंकि यह डिगबोई पुलिस स्टेशन और अजऊसिक्योरिटी कंट्रोल रूम दोनों के पास हुई, इन इलाकों को आमतौर पर हाई सर्विलांस में माना जाता है। लोगों ने अधिकारियों से पुलिस पेट्रोलिंग बढाने, सर्विलांस में सुधार करने और जिम्मेदार लोगों की जल्द गिरफ्तारी पक्का करने की अपील की है।पुलिस ने कहा कि जांच चल रही है, और जांच आगे बढने पर और जानकारी मिलने की उम्मीद है।

असम में बाढ.से मरने वालों की संख्या बढक़र आठ हुई, जोरहाट में तीन और मौतें

जोरहाट (अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: : असम में बाढ.की स्थिति और भी दुखद हो गई है, जोरहाट जिले में तीन और लोगों की मौत के बाद मरने वालों की संख्या बढक़र आठ हो गई है, जबकि लगातार बारिश से राज्य के बडे.हिस्से जलमग्न हो गए हैं। असम स्टेट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (ASDMA) के लेटेस्ट अपडेट के मुताबिक, बाढ.प्रभावित कई जिलों में १.७ लाख से ज़्यादा लोग अभी भी प्रभावित हैं।इन नई मौतों ने बाढ.के बढते संकट को लेकर चिंता बढा दी है, उफनती नदियाँ खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं और सैकडों गाँव अभी भी पानी में डूबे हुए हैं। अधिकारियों ने खतरे वाले इलाकों में रहने वालों से अलर्ट रहने और खाली करने की सलाह का सख्ती से पालन करने की अपील की है। जलि़ा प्रशासन, SDRF, NDRF और दूसरी एजेंसियां ??बचाव और राहत अभियान चला रही हैं। बेघर हुए परिवारों को पनाह देने के लिए राहत कैंप लगाए गए हैं, जबकि प्रभावित लोगों को खाना, पीने का पानी, मेडिकल मदद और दूसरी जरूरी चीजें.दी जा रही हैं। बाढ.के पानी ने सडक़ों, तटबंधों, खेती की जमीन और पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचाया है, जिससे कई जिलों में आम जदिंगी में रुकावट आई है। राज्य सरकार बदलते हालात पर करीब से नजर रख रही है और अधिकारियों को बिना किसी रुकावट के बचाव और पुनर्वास के काम सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। लगातार बारिश की संभावना के अनुमान के साथ, अधिकारियों ने लोगों से बाढ.वाले इलाकों में जाने से बचने और सरकारी सलाह के जरिए अपडेट रहने की अपील की है क्योंकि बचाव दल हाई अलर्ट पर हैं।

NDRF ने असम के जोरहाट में बाढ.के पानी से पांच लोगों को बचाया

जोरहाट (अर्णव शर्मा) २१ जुलाई ::: नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (NDRF) और डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (DDMA), जोरहाट ने हिम्मत और तेजी से आपदा पर काबू पाने का शानदार प्रदर्शन करते हुए, टीओक रेवेन्यू सर्कल में भारी बाढ.के पानी में फंसे पांच लोगों को बचाया, जिससे एक बडी त्रासदी टल गई। १९ जुलाई को डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी से मिले इमरजेंसी अलर्ट पर कार्रवाई करते हुए, पहली बटालियन की एक NDRF रेस्क्यू टीम को डिप्टी कमांडेंट एन.के. तिवारी की सीधी देखरेख में चेलेंग टी एस्टेट के पास बाढ.से प्रभावित चेलेघाट इलाके में तुरंत तैनात किया गया। रेस्क्यू ऑपरेशन को इंस्पेक्टर के.वी. नाथ ने लीड किया। मौके पर पहुंचने पर, टीम ने पाया कि बाढ.का पानी तेजी से बढ.रहा था, जिससे कई लोग अलग-अलग जगहों पर फंस गए थे। शाम करीब ७:३५ बजे, छउ्रठ्रत्र ने सर्च-एंड-रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। ऑपरेशन के दौरान, रेस्क्यू करने वालों ने एक डूबे हुए घर से मदद के लिए चीख-पुकार सुनी। वे तुरंत उस जगह पर पहुँचे और देखा कि एक छोटी लडक़ी छत के नीचे बांस के सहारे चिपकी हुई थी। बाढ.का पानी उसकी गर्दन तक आ गया था, जिससे वह बहुत ही जानलेवा स्थिति में फँस गई थी। बहुत बहादुरी और प्रोफेशनल एक्सपटीज.दिखाते हुए, टीम ने उसे सफलतापूर्वक बचा लिया। कुछ देर बाद, बचाव दल ने एक आदमी को तेज.बहाव में केले के पेड.को पकडे.हुए तैरते रहने के लिए संघर्ष करते देखा। उसे तुरंत सुरक्षित बाहर निकाला गया।बचाए जाने के बाद, लडक़ी ने टीम को बताया कि तीन औरतें भी पास में फँसी हुई थीं, जो तेज.बाढ.के पानी के बीच केले के पेडों को बुरी तरह पकड.रही थीं। NDRF ने तुरंत एक और खोज शुरूकी और तीनों औरतों को सफलतापूर्वक बचा लिया। उनमें से एक, एक बुजु़र्ग महिला, ठंडे बाढ.के पानी में लंबे समय तक रहने के कारण गंभीर हालत में पाई गई और उसे हाइपोथर्मिया हो रहा था। बचाव टीम ने सभी पाँच बचे हुए लोगों को फर्स्ट एड दिया और फिर उन्हें आगे के मेडिकल ट्रीटमेंट और रिहैबिलिटेशन के लिए एक तय रिलीफ कैंप में सुरक्षित पहुँचा दिया।इस सफल ऑपरेशन ने जोरहाट डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन, डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी और NDRF के बीच तुरंत तालमेल को दिखाया। उनके समय पर दखल, हिम्मत और प्रोफेशनलिज़्म ने पाँच कीमती जानें बचाई और एक बार फिर प्राकृतिक आपदाओं के दौरान जान बचाने के लिए छउ्रठ्रत्र का कमिटमेंट दिखाया।

मार्गेरिटा में बाढ.राहत के लिए १४ कैंप, २,८२९ लोगों को मिली पनाह

मार्गेरिटा: (अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: असम के तिनसुकिया जलि़े में मार्गेरिटा सह-जलि़ा प्रशासन ने बाढ.राहत और पुनर्वास के कामों को तेज़ कर दिया है, क्योंकि बाढ.का पानी कई इलाकों को प्रभावित कर रहा है। अधिकारी अभी १४ राहत कैंप और राहत वितरण केंद्र चला रहे हैं, जहाँ २,८२९ विस्थापित लोगों को रहने की जगह और जरूरी मदद दी जा रही है।बाढ.से प्रभावित परिवारों की भलाई के लिए राहत कैंपों में खाना, पीने का साफ.पानी, मेडिकल सुविधाएँ, साफ.-सफाई की सुविधाएँ और दूसरी जरूरी चीजें.उपलब्ध कराई गई हैं। कैंप में रहने वाले लोगों की सेहत पर नजर रखने और पानी से होने वाली बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए मेडिकल टीमें भी तैनात की गई हैं। जिला प्रशासन, आपदा प्रबंधन अधिकारियों और स्थानीय एजेंसियों के साथ मिलकर बाढ.की स्थिति पर चौबीसों घंटे नजर रख रहा है। अधिकारियों ने भरोसा दिलाया है कि राहत सामग्री लगातार बांटी जा रही है और बाढ.से विस्थापित लोगों की मदद के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं।यह राहत अभियान ऐसे समय में तेज.किया गया है जब असम बाढ.की बिगडती स्थिति से जूझ रहा है; कई जलि़े नदियों के उफान और भारी बारिश से प्रभावित हैं। प्रभावित इलाकों में बचाव और पुनर्वास के काम जारी हैं और राज्य के अधिकारी हाई अलर्ट पर हैं।

मंत्री अतुल बोरा ने बोकाखाट रिलीफ कैंप का दौरा किया, बाढ.राहत के उपायों का रिव्यू किया

बोकाखाट:(अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: असम के मंत्री और बोकाखाट के चडअ अतुल बोरा ने हाल ही में आई बाढ.के बाद हजारों लोगों के मुश्किल हालात से जूझने के बीच चल रहे राहत और पुनर्वास के कामों का जायजा लेने के लिए बाढ.राहत कैंपों और बोकाखाट के कई बाढ.प्रभावित इलाकों का दौरा किया। अपने दौरे के दौरान, मंत्री ने नुमालीगढ.हायर सेकेंडरी स्कूल, पब कुरुआबाही चए स्कूल और चिनकान में रिलीफ कैंपों का निरीक्षण किया, जहाँ बेघर हुए परिवारों ने शरण ली हुई है। उन्होंने रहने वालों से बातचीत की, उनकी शिकायतें सुनीं और खाना, पीने का पानी, हेल्थकेयर, सफाई और दूसरी राहत सामग्री जैसी जरूरी सेवाओं की उपलब्धता का रिव्यू किया। बोरा ने प्रभावित परिवारों को भरोसा दिलाया कि असम सरकार हालात सामान्य होने तक हर मुमकिन मदद देने के लिए तैयार है। उन्होंने जलि़े के अधिकारियों को यह पक्का करने का निर्देश दिया कि बाढ.से प्रभावित किसी भी व्यक्ति को राहत सामग्री, मुआवजा या पुनर्वास में मदद मिलने में कोई दिक्कत न हो। उन्होंने प्रशासन को नुकसान का आकलन तेजी से करने का भी निर्देश दिया ताकि योग्य लाभार्थियों को बिना देर किए सरकारी मदद मिल सके।मंत्री ने कुरुआबाही और चिनकान समेत डूबे हुए गांवों का भी दौरा किया, जहां उन्होंने बाढ.की स्थिति का जायजा लिया और स्थानीय लोगों से बातचीत करके यह समझा कि घरों और किसानों को कितना नुकसान हुआ है। अधिकारियों ने उन्हें प्रभावित इलाकों में चल रहे बचाव अभियान, राहत बांटने और बहाली के उपायों के बारे में जानकारी दी।निरीक्षण के दौरान मंत्री के साथ गोलाघाट जिला कमिश्नर पुलक महंता, बोकाखाट सब-डिविजनल ऑफिसर, रेवेन्यू सर्कल के अधिकारी, पंचायत प्रतिनिधि और स्थानीय जनप्रतिनिधि थे, जिन्होंने जमीन पर राहत कार्यों की प्रगति का जायजा लिया।यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब गोलाघाट जिले के कई हिस्सों में बाढ.का पानी अभी भी बना हुआ है, जिससे आम जीवन बाधित हो रहा है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। जिला प्रशासन ने बचाव अभियान, स्वास्थ्य सेवाएं और प्रभावित परिवारों को जरूरी सामान की सप्लाई जारी रखते हुए राहत और पुनर्वास के उपाय तेज कर दिए हैं।

गोलाघाट में खुमताई रोड पर बनावटी बाढ, ट्रैफिक जाम

गोलाघाट:(अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: लगातार बारिश के बाद आई भयानक बनावटी बाढ.ने असम के गोलाघाट जिले में आम जदि़गी पर असर डाला है, खुमताई में सडक़ का एक अहम हिस्सा अभी भी पानी में डूबा हुआ है और इससे भारी ट्रैफिक जाम हो गया है।बिजी सडक़ पर पानी भरने से गाडि़यों की आवाजाही लगभग रुक गई, जिससे आने-जाने वाले घंटों तक फंसे रहे। स्कूल बसों, पैसेंजर गाडि़यों और कमर्शियल ट्रकों समेत गाडि़यों की लंबी कतारें देखी गई, क्योंकि गाडी चलाने वालों को पानी भरे हिस्से से निकलने में मुश्किल हो रही थी।स्थानीय लोगों ने बार-बार होने वाली इस समस्या के लिए ड्रेनेज का इंफ्रास्ट्रक्चर ठीक न होना और खराब बारिश के पानी का मैनेजमेंट जम्मिेदार ठहराया है। उन्होंने आरोप लगाया कि सालों से बार-बार शिकायत करने के बावजूद, कोई पक्का हल नहीं निकाला गया, जिससे हल्की बारिश के बाद भी बनावटी बाढ.आ गई। पानी भरी सडक़ ने न सिर्फ.रोजाना आने-जाने वालों को परेशान किया है, बल्कि इमरजेंसी सर्विस, पब्लिक ट्रांसपोर्ट और जरूरी सामान की आवाजाही में भी रुकावट डाली है। लोगों ने चिंता जताई कि इस स्थिति से सडक़ सुरक्षा को गंभीर खतरा है, पानी में डूबे ग्रों और खराब सडक़ की सतह से हादसों की संभावना बढ.जाती है। स्थानीय लोगों ने जिला प्रशासन और पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट (PWD) से तुरंत पानी निकालने के उपाय करने और मानसून के मौसम में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ड्रेनेज नेटवर्क में लंबे समय के लिए सुधार शुरूकरने की अपील की है। यह घटना एक बार फिर असम में शहरी बाढ.की बढती चुनौती को दिखाती है, जहाँ खराब ड्रेनेज सिस्टम के कारण मुख्य सडक़ें जलभराव की चपेट में आ रही हैं, जिससे लोगों की आवाजाही और रोजमर्रा की जदि़गी पर बहुत बुरा असर पड.रहा है।

तिनसुकिया कृषि विज्ञान केंद्र में किसानों को अच्छी क्वालिटी के बीज और पौधे लगाने का सामान बांटा गया

तिनसुकिया: (अर्णव शर्मा) २१ जुलाई :: खेती की पैदावार बढाने और किसानों की इनकम बढाने के मकसद से एक बडी पहल के तहत, असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (AAU) के तहत तिनसुकिया के कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) ने एक खास प्रोग्राम में किसानों को अच्छी क्वालिटी के बीज और पौधे लगाने का सामान बांटा। इस इवेंट में तिनसुकिया के MLA पुलक गोगोई, मार्गेरिटा के MLA संजय किशन और तिनसुकिया के डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर सुमित सत्तावन शामिल हुए। यह प्रोग्राम असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी और इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी, गुवाहाटी के साथ मिलकर AAU के वाइस-चांसलर डॉ. दीपज्योति राजखोवा और डायरेक्टर ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन डॉ. मनोरंजन नियोग की गाइडेंस में ऑर्गनाइज.किया गया था। लोगों का स्वागत करते हुए, घतघ तिनसुकिया के सीनियर साइंटिस्ट और हेड, डॉ. हेमचंद्र सैकिया ने फसल की पैदावार बढाने के लिए अच्छी क्वालिटी के बीजों और हेल्दी पौधे लगाने के सामान की अहमियत पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि करीब १०० किसानों को खेती का सामान मिला, जिसमें करीब २० हेक्टेयर में काला चना (SBC-40 श्यामल वैरायटी), ५ हेक्टेयर में हरा चना (SGC-१६ रूपोही वैरायटी), और १० हेक्टेयर में तिल (चंपावती वैरायटी) शामिल हैं। किसानों को मशरूम स्पॉन, नेपियर घास लगाने का सामान, हाथी पांव रतालू लगाने का सामान, काली मिर्च के पौधे और फसल के दूसरे सामान भी दिए गए। जिला कमिश्नर सुमित सत्तावन ने इस पहल की तारीफ की और इस बात पर जोर दिया कि खेती की लगातार ग्रोथ के लिए बीमारी-मुक्त, अच्छी क्वालिटी वाले बीजों का इस्तेमाल जरूरी है। उन्होंने किसान-केंद्रित प्रोग्राम लागू करने में KVK तिनसुकिया को जिला प्रशासन के लगातार सपोर्ट को भी दोहराया। MLA पुलक गोगोई ने खुद किसानों को बीज बांटे और उन्हें ज़्यादा पैदावार के लिए वैज्ञानिक खेती के तरीके अपनाने के लिए बढावा दिया। मार्गेरिटा चडअ संजय किशन ने भी बीज और पौधे लगाने का सामान बांटते हुए भरोसा जताया कि इस पहल से खेती की पैदावार में काफी सुधार होगा और किसानों की रोजी-रोटी मजबूत होगी।इस मौके पर, एक्सटेंशन एजुकेशन के एसोसिएट डायरेक्टर, डॉ. रंजीत कुमार सऊद ने किसानों को दलहन की फसलें उगाने के लिए बढावा दिया और भारत सरकार के दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता पाने पर फोकस पर जोर दिया।इस प्रोग्राम के हिस्से के तौर पर, असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के ICAR-AICRP प्रोजेक्ट के तहत किसानों को लगभग २०० बीमारी-मुक्त मीठा नींबू और नींबू के पौधे बांटे गए। यह प्रोजेक्ट रिसर्च डायरेक्टर और वाइस-चांसलर के ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी डॉ. मृणाल सैकिया की देखरेख में किया गया। इस इवेंट में मोबाइल प्लांट हेल्थ क्लिनिक की भी शुरुआत की गई, जो असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी द्वारा शुरूकी गई एक फील्ड-बेस्ड पहल है, जिसका मकसद फसल की बीमारियों और कीडों के इंफेक्शन के लिए मौके पर ही डायग्नोसिस और सलाह देना है। प्रोग्राम के दौरान कई किसानों ने इस सुविधा का फायदा उठाया।इस इवेंट में एक्सटेंशन एजुकेशन के एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. रंजीत कुमार सऊद, तिनसुकिया डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर राजित दत्ता, सिट्रस एंड प्लांटेशन क्रॉप्स रिसर्च स्टेशन के चीफ साइंटिस्ट डॉ. राजकुमार काकोटी, सीनियर साइंटिस्ट डॉ. रूपज्योति बोरा और कई दूसरे अधिकारी और एग्रीकल्चर एक्सपर्ट भी शामिल हुए।

बडख़ला के रानीघाट अल्ताफ पुल के नीचे बराक नदी में अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से सनसनी

प्रे.सं शिलचर, २१ जुलाई। कछार जिले के बडख़ला विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत रानीघाट अल्ताफ पुल के नीचे मंगलवार दोपहर करीब १२ बजे बराक नदी में एक अज्ञात व्यक्ति का शव तैरता हुआ मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई।स्थानीय लोगों ने नदी में शव को तैरते हुए देखा और इसकी सूचना तत्काल आसपास के लोगों को दी। देखते ही देखते रानीघाट अल्ताफ पुल तथा आसपास बडी संख्या में लोगों की भीड.जमा हो गई। घटना की सूचना मिलने के बाद भांगरपार पुलिस चौकी की टीम मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरूकर दी।

समाचार लिखे जाने तक मृतक की पहचान नहीं हो सकी थी। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि व्यक्ति की मौत किन परिस्थितियों में हुई और शव नदी में कैसे पहुंचा। पुलिस के अनुसार, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच पूरी होने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का स्पष्ट पता चल सकेगा।

सूर्या फाउंडेशन ने किया पौधारोपण, ग्रामीणों ने लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

प्रे.सं दीनदयाल धाम। सूर्या फाउंडेशन की आदर्श गांव योजना के तहत दीनदयाल धाम में पर्यावरण संरक्षण एवं हरित वातावरण को बढावा देने के उद्देश्य से पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीणों, युवाओं, महिलाओं और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए पौधारोपण किया और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।इस अवसर पर ग्रामीणों को छायादार एवं फलदार पौधों का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सूर्या फाउंडेशन के जोन प्रमुख लाल कश्यप ने कहा कि वृक्ष न केवल पर्यावरण को शुद्ध रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि आने वाली पीढि़यों के सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य की आधारशिला भी हैं।ब्रज क्षेत्र प्रमुख आदर्श मिश्रा ने ग्रामीणों से पौधों की नियमित देखभाल करने तथा उन्हें वृक्ष बनने तक संरक्षण देने का आह्वान किया। कार्यक्रम में बडी संख्या में ग्रामीणों की सहभागिता रही।

सीतामममय हुआ सिवान का श्रीनगर पिहुली: २४ घंटे अखंड नाम संकीर्तन एवं दिव्य व्याख्यानों के साथ श्रद्धापूर्वक मनाई गई पूज्य मौनी बाबा की ४१वीं साकेतवास पुण्यतिथि

एक सद्गृहस्थ युग पुरुष के रूप में श्री मौनी जी महाराज को सदा याद रखा जाएगा - डॉ. अभिषेक कुमार उपाध्याय

प्रे.सं सिवान, २१ जूलाई - परम पूज्य श्री श्री १००८ साकेतवासी श्री मौनी जी महाराज (बलिया वाले) की ४१वीं साकेतवास पुण्यतिथि के पावन अवसर पर बिहार के सिवान जनपद के असाव क्षेत्र स्थित श्री राम जानकी मंदिर, श्रीनगर पिहुली में दो दिवसीय आध्यात्मिक महोत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर देश-विदेश से जुडे.श्रद्धालुओं, संत-महात्माओं एवं विद्वानों ने पूज्य गुरुदेव के दिव्य जीवन, उनके आध्यात्मिक संदेशों तथा श्रीसीताराम नाम संकीर्तन की महिमा का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

महोत्सव का शुभारंभ २० जुलाई २०२६ को २४ घंटे के अखंड श्रीसीताराम युगल नाम संकीर्तन एवं अखंड श्रीरामचरितमानस पाठ के साथ हुआ। संपूर्ण आयोजन के दौरान मंदिर परिसर निरंतर ङ्गसीताराम-सीतारामङ्क के मंगलमय जयघोष से गुंजायमान रहा तथा श्रद्धालु अखंड भक्ति-रस में निमग्न रहे।२१ जुलाई को अखंड संकीर्तन की पूर्णाहुति के उपरांत सामूहिक सुंदरकांड पाठ एवं श्रीहनुमान चालीसा का सस्वर पाठ संपन्न हुआ। बिहार के सुप्रसिद्ध भजन-गायकों द्वारा प्रस्तुत भक्तिमय भजनों ने संपूर्ण वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा एवं भक्ति-भाव से सराबोर कर दिया। इस अवसर पर उपस्थित संतों एवं विद्वान महापुरुषों ने पूज्य मौनी बाबा के तप, त्याग, साधना एवं लोककल्याणकारी जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके अमर संदेश ङ्गनाम जप ही कल्याण का सर्वोत्तम साधन हैङ्कको वर्तमान युग में प्रासंगिकता पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

आयोजन की एक विशेष उपलब्धि यह रही कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी त्रेसश्रश चशर्शी के माध्यम से देशभर के संतों एवं विद्वानों के ऑनलाइन विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. सुधाकर मिश्र (न्यासी, श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास, तथा अध्यक्ष, वेदान्त विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) ने अपने प्रेरक उद्बोधन में पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक व्यक्तित्व, श्रीसीताराम नाम संकीर्तन की महिमा तथा वर्तमान समय में सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं आध्यात्मिक मूल्यों के पुनर्जागरण की आवश्यकता पर विस्तृत विचार व्यक्त किए।कार्यक्रम का समापन भव्य महाप्रसाद (भंडारा) के साथ हुआ, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। श्रद्धालुओं ने पूज्य गुरुदेव के चित्रस्वरूप के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी तथा उनके बताए आध्यात्मिक आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।इस पावन अवसर पर श्री राम जानकी मंदिर के महंत श्री १०८ श्री राघव दास जी महाराज का विशेष सानिध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। संपूर्ण आयोजन श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास, बलिया तथा बिहार प्रांत के समस्त शिष्यों एवं श्रद्धालु भक्तों के समर्पित सहयोग से भगवान की अहैतुकी कृपा द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के ज्येष्ठ सुपुत्र एवं शिष्य ने अपने संबोधन में कहा कि पूज्य मौनी बाबा ने गृहस्थ जीवन का निर्वहन करते हुए हिमालय की कंदराओं में लगातार १२ वर्षों तक मौन साधना कर आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त की। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन श्रीसीताराम नाम संकीर्तन के प्रचार-प्रसार, भक्ति, सदाचार तथा आध्यात्मिक चेतना के जागरण हेतु समर्पित कर दिया। उनके द्वारा प्रारंभ की गई लगभग ७६ वर्ष पुरानी बलिया की यह आध्यात्मिक परंपरा आज उत्तर प्रदेश, बिहार सहित देश के विभिन्न राज्यों में निरंतर जनमानस को धर्म, संस्कृति एवं आध्यात्मिक जीवन के प्रति प्रेरित कर रही है।इस अवसर पर प्रखण्ड प्रमुख आन्दर सिवान बिहार श्रीमती राधा देवी ने बताया कि ऐसे अवसर हमारे जीवन में अनेक प्रकार से आनन्द प्रदान करने वाला है।

श्रद्धालुओं ने एक स्वर से पूज्य गुरुदेव के अमर संदेश को स्मरण करते हुए कहा कि ङ्गकलियुग में श्रीनाम ही एकमात्र सहारा है।ङ्कइस अवसर पर श्री शिवजी पाण्डेय सोनू पाण्डेय मुखिया, बुक्कू पाण्डेय, राधेश्याम पाठक, बृजेन्द्र पाण्डेय, कुन्दन पाण्डेय, आदर्श तिवारी, राजा तिवारी, गुडय़िा दुबे, पल्लवी पाण्डेय, पलक पाठक, नीरज उपाध्याय, सौरभ उपाध्याय, अनुग्रह उपाध्याय, अर्पित सिंह, उज्जवल मल्ल, सूर्यदेव पाण्डेय, रामपूजन पाण्डेय सहित हजारों श्रद्धालु, मातृशक्ति, युवा, संत एवं विद्वान जन उपस्थित रहे तथा पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में श्रद्धासुमन अर्पित कर उनका पुण्यस्मरण किया।इस संपूर्ण आयोजन की आधिकारिक जानकारी डॉ. अभिषेक कुमार उपाध्याय, मुख्य न्यासी, श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास एवं गुरुकुल एवं मंदिर सेवा योजना प्रमुख, जम्मू-कश्मीर प्रांत द्वारा उपलब्ध कराई गई।

असम-मिजोरम सीमा पर पुलिस की बडी कार्रवाई, १,००० से अधिक बोरी यूरिया खाद जब्त

लायलापुर। (एजें) २१ जुलाई : असम-मिजोरम सीमा पर अवैध तस्करी के खिलाफ पुलिस को बडी सफलता मिली है। लायलापुर पुलिस पेट्रोल पोस्ट के पास नाका जांच के दौरान पुलिस ने खाद्य सामग्री की आड.में कथित रूप से तस्करी की जा रही यूरिया खाद से लदे दो १२-चक्का ट्रकों को जब्त किया।

पुलिस के अनुसार, दोनों ट्रकों से १,००० से अधिक बोरियां यूरिया खाद बरामद की गई हैं। कार्रवाई के दौरान दो ट्रक चालकों और दो सहचालकों सहित कुल चार लोगों को हिरासत में लिया गया है।पुलिस अब बरामद यूरिया खाद के स्रोत, गंतव्य और इस पूरे नेटवर्क के पीछे सक्रिय मुख्य गिरोह का पता लगाने के लिए गहन जांच कर रही है। सीमा क्षेत्र में तस्करी के खिलाफ पुलिस की इस कार्रवाई से स्थानीय लोगों में संतोष है।

अखिल भारतीय भर राजभर संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष महेंद्र भर के निधन से हाइलाकांदी में शोक की लहर

प्रे.सं. हाइलाकांदी, २१ जुलाई। अखिल भारतीय भर राजभर संगठन की प्रदेश समिति के उपाध्यक्ष तथा केंद्रीय समिति के सदस्य महेंद्र भर (५७) के निधन से हैलाकांदी जिले में शोक की लहर है। सोमवार को राताकांदी स्थित उनके पैतृक आवास पर अंतिम दर्शन और श्रद्धांजलि देने के लिए विभिन्न वर्गों के लोगों की भीड.उमड.पडी।जाति, धर्म और समुदाय से ऊपर उठकर समाज के सभी वर्गों के लोगों ने दिवंगत नेता के पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर अंतिम श्रद्धांजलि दी। इसके बाद धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार उनका अंतिम संस्कार संपन्न किया गया।

परिवार के सूत्रों के अनुसार, महेंद्र भर लंबे समय से गंभीर बीमारी से पीडति थे और उनका इलाज चल रहा था। रविवार को शिलांग स्थित नीग्रिम्स अस्पताल में उपचार के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके निधन की खबर फैलते ही संगठन के नेता-कर्मियों, शुभचिंतकों और परिचितों में शोक की लहर दौड.गई।अपने पीछे वे पत्नी संध्या रानी भर, दो पुत्र, दो पुत्रियों, नाती-पोतों सहित बडी संख्या में परिजनों और शुभचिंतकों को छोड.गए हैं।अंतिम श्रद्धांजलि कार्यक्रम में अखिल भारतीय भर राजभर संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष हरिमोहन राजभर, जिला अध्यक्ष हरिदयाल राजभर, विशिष्ट समाजसेवी एवं पंचायत नेता बलिराम नुनिया, जिला उपाध्यक्ष राज कुमार भर, क्षेत्रीय समिति की अध्यक्ष सुनीता राजभर, कंचनपुर जीपी के पूर्व क्षेत्रीय सदस्य खालिक उद्दीन लस्कर, समाजसेवी ध्रुव रविदास, केंद्रीय सदस्य लक्ष्मण राजभर, राजू राजभर, महावीर राजभर, पंडित श्याम सुंदर पांडे, किरण भर, कादिर लस्कर और समाजसेवी साहारुल मजूमदार सहित संगठन के विभिन्न स्तरों के नेता-कर्मी तथा क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित थे।उपस्थित नेताओं ने शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की चिरशांति की कामना की।इस अवसर पर संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष हरिमोहन राजभर ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि महेंद्र भर संगठन के एक निष्ठावान, ईमानदार और कर्मठ कार्यकर्ता थे। समाजसेवा तथा संगठन के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। उनके निधन से अखिल भारतीय भर राजभर संगठन ने एक कुशल संगठनकर्ता को खो दिया है और संगठनात्मक क्षेत्र में अपूरणीय शून्य पैदा हुआ है।

लखीमपुर लायंस क्लब प्रेरणा की नई अध्यक्ष बनीं तजवर सुल्ताना तालुकदार* 'डॉ. नीना दत्ता ने दिलाई शपथ, नई टीम ने संभाला कार्यभार'

प्रे.सं.लखीमपुर २१ जुलाई : विश्व के सबसे बडे.स्वयंसेवी संगठन 'लायंस क्लब इंटरनेशनल' की लखीमपुर शाखा लायंस क्लब लखीमपुर प्रेरणा के सत्र २०२६-२७ के लिए नए पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह रविवार को गरिमापूर्ण माहौल में संपन्न हुआ।कार्यक्रम लखीमपुर बाईपास स्थित 'रेनबो फैमिली रेस्टोरेंट' के सभा कक्ष में आयोजित किया गया। इसमें श्रीमती तजवर सुल्ताना तालुकदार ने क्लब की नई अध्यक्षा के रूप में पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। उनके साथ पूरी नई टीम ने भी शपथ ग्रहण की।लायंस इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट ३२२ऊ की नवनियुक्त डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन डॉ. नीना दत्ता मुख्य अतिथि एवं चीफ इंस्टालेशन ऑफिसर के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को पद की शपथ दिलाई।इस अवसर पर डॉ. मंदिरा शर्मा चालिया को सचिव और श्रीमती उर्मिला दिनोदिया को कोषाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया।सभा की शुरुआत पारंपरिक 'फूलन गमछा' से अतिथियों के स्वागत के साथ हुई। डॉ. निशांत राजकाकोती ने डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. नीना दत्ता के जीवन परिचय और सामाजिक योगदान पर प्रकाश डाला। वहीं निवर्तमान सचिव उर्मिला दिनोदिया ने सत्र २०२५-२६ की उपलब्धियों और गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. नीना दत्ता को सम्मान स्वरूप पारंपरिक पीतल की 'जपी' और 'चैलेंग चादर' भेंट की गई। कार्यक्रम में प्रमुख लायंस पदाधिकारी उपस्थित रहेलायन रक्तिम गोगोई रीजन चेयरपर्सन,रीजन दो लायन माणिक लाल दमानी जोन चेयरपर्सन,जोन चार लायन पल्लवी तमोली कोंवार जोन चेयरपर्सन, जोन तीन लायन संजीव चटर्जी सचिव, लायंस क्लब डिब्रूगढ. श्री राजीव दत्ता अध्यक्ष, लायंस इंटरनेशनल बंदरदेवा ग्रेटर अनिला अग्रवाल, कमला हरलालका, रंजू बाकलीवाल सहित कई सदस्य उपस्थित रहे। समारोह को संबोधित करते हुए डिस्ट्रिक्ट गवर्नर, रीजन और जोन चेयरपर्सन ने नई टीम को बधाई दी और समाज सेवा में नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। अंत में लायन गोपाल चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

शब्दवीणा की काव्यगोष्ठी में विविध विषयों पर पढ़ी गयीं रचनाएँ

गया जी। २१ जुलाई:राष्ट्रीय साहित्यिक एवं साहित्यिक संस्था शब्दवीणा की कर्नाटक प्रदेश समिति ने मासिक काव्यगोष्ठी आयोजित की, जिसमें शब्दवीणा की बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, झारखंड, नई दिल्ली, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र आदि प्रदेश समितियों से आमंत्रित कवि-कवयित्रियों ने विविध विषयों पर एक से बढ़कर एक रचनाएँ पढ़ीं। कार्यक्रम का संचालन शब्दवीणा की कर्नाटक प्रदेश अध्यक्ष डॉ सुनीता सैनी गुड्डी एवं प्रदेश उपाध्यक्ष विजयेंद्र सैनी ने संयुक्त रूप से किया। अध्यक्षता शब्दवीणा मथुरा जिला के सचिव वरिष्ठ कवि फतेहपाल सिंह सारंग ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पश्चिम बंगाल से पुरुषोत्तम तिवारी एवं मध्य प्रदेश से अरुण अपेक्षित एवं झारखंड से डॉ विजय शंकर की उपस्थिति रही। काव्य गोष्ठी का शुभारंभ डॉ सैनी ने सरस्वती वंदना से किया। कार्यक्रम की समन्वयक एवं शब्दवीणा की राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो डॉ रश्मि प्रियदर्शनी ने शब्दवीणा गीत प्रस्तुत किया। काव्यगोष्ठी में आशा दिनकर, संजय सैनी, सुशील कुमार, रमेश चंद्र, जैनेंद्र कुमार मालवीय, दीपक कुमार, रामदेव शर्मा राही, अरुण अपेक्षित, डॉ विजय शंकर, डॉ सोनम झा, निगम राज़, संध्या निगम, पुरुषोत्तम तिवारी, अजय कुमार वैद्य, फतेहपाल सिंह सारंग, सुनीता सैनी गुड्डी, विजयेंद्र सैनी एवं डॉ रश्मि प्रियदर्शनी द्वारा प्रस्तुत गीत, गज़ल, मुक्तक, दोहे एवं कुंडलिया छंदों पर दर्शकों एवं श्रोताओं की खूब सराहना मिली। दीपक कुमार ने सुमधुर स्वर में 'मन बनके बादल-सा, उमड़ घुमड़ नील गगन, बरसाता सावन-सा नैनों से पानी' एवं अरुण अपेक्षित ने 'कितना भी कागा चिल्लाये, कोयल-सा स्वर कैसे पाये। यह तो ईश्वर का प्रसाद है, यह सौभाग्य कहां से लाये' सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर डाला। आशा दिनकर की 'कयामत करेगी असर धीरे-धीरे। गुजरता सुहाना सफर धीरे-धीरे' एवं रामदेव शर्मा राही की गज़ल 'नज़र दर्द-ए-दिल की जुबां हो गयी है' एवं डॉ सुनीता सैनी के लोकगीत 'खबर चंदा चोरी की आयी है' को भी श्रोताओं ने काफी पसंद किया। डॉ. रश्मि प्रियदर्शनी की गज़ल 'दुख की घड़ियों में भी जिसने गीत खुशी का गाया है। उसने ही इतिहास रचा, उसने ही नाम कमाया है। तूफ़ानों ने पेड़ गिराये, तोड़ दिया दीवारों को। नन्ही कोमल दूबों पर कोई जोर नहीं चल पाया है' को मंच एवं श्रोताओं ने अति प्रेरक, भावपूर्ण एवं सुमधुर बतलाया। डॉ रश्मि ने बादल एवं बरसात पर मुक्तक 'उमड़ते हैं, घुमड़ते हैं, बरसते क्यों नहीं बादल' एवं कुंडलिया छंद 'काले बादल देख के, हर्षित अखिल जहान। प्रमुदित है सारी धरा, प्रमुदित सभी किसान' भी पढ़ा। जैनेंद्र कुमार मालवीय के गीत 'इस जग में जीकर के बड़े हैरान हुए हैं हम', निगम राज़ की गज़ल, 'अपने कहाँ अपनों में जीते हैं, हम सब यहाँ सपनों में जीते हैं' एवं अजय कुमार वैद्य की 'आसमान में उड़ने की ख्वाहिश है, ऐसा है चंचल मन' पंक्तियों पर खूब तालियाँ बजीं। कार्यक्रम अध्यक्ष फतेहपाल सिंह सारंग के कुंडलिया छंद 'आया सावन झूम के, रिमझिम पड़े फुहार। बैठ पवन रथ गगन में, बादल करें विहार' सुनाया। उन्होंने शब्दवीणा द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों को उत्कृष्ट ठहराते हुए संस्था की अनवरत सक्रियता एवं सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। संजय सैनी, सुशील कुमार, रमेश चंद्र एवं सोनम झा की रचनाएँ भी शानदार रहीं। पुरुषोत्तम तिवारी ने शब्दवीणा परिवार को मंगलमय भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं। धन्यवाद ज्ञापन डॉ विजय शंकर ने किया। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण शब्दवीणा केन्द्रीय पेज से किया गया, जिससे जुड़कर सुरेश विद्यार्थी, प्रो. सुनील कुमार उपाध्याय, प्यारचन्द कुमार मोहन, बबन बदिया, संतोष कुमार जयंत, डॉ रामसिंहासन सिंह, डॉ रवि प्रकाश, विनोद कुमार बरबिगहिया सहित विभिन्न प्रदेशों से जुड़े साहित्यानुरागियों ने काव्य पाठ का आनंद उठाया।

एनटीपीसी बोंगाईगांव की अनूठी पहल: असम में दुर्लभ गोल्डन लंगूर के संरक्षण के लिए कृत्रिम कैनोपी ब्रिज स्थापित

कोकराझार (असम) २१ जुलाई :पर्यावरण स्थिरता और जैव विविधता संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए, एनटीपीसी बोंगाईगांव (NTPC Bongaigaon) ने असम के कोकराझार जिले के नाडांगिरी-बक्सा मारा-अंबुरी-नायेकगांव-चक्रशिला वन परिसर में दुर्लभ और संकटग्रस्त गोल्डन लंगूर (Golden Langur) के संरक्षण के लिए एक अभिनव परियोजना का समर्थन किया है। ?यह परियोजना वित्त वर्ष २०२५-२६ के दौरान अपने सतत विकास (डीौींरळपरलश्रश उर्शींशश्रेशिपीं) पहलों के तहत १० लाख रुपये की वित्तीय सहायता से क्रियान्वित की गई है। ?साझेदारी और सहयोग: इस पहल को हाल्टूगांव वन प्रभाग (Haltugaon Forest Division) और प्राइमेट रिसर्च सेंटर, नॉर्थ-ईस्ट इंडिया के संयुक्त सहयोग से लागू किया गया है। ?कृत्रिम कैनोपी ब्रिज (Artificial Canopy Bridges): वनों के खंडित होने और सड़कों के विस्तार के कारण पेडों पर रहने वाले ये जीव सड़क पार करते समय अक्सर दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते थे। इस समस्या से निपटने के लिए रणनीतिक रूप से ६ कृत्रिम कैनोपी ब्रिज स्थापित किए गए हैं, ताकि लंगूर बिना जमीन पर उतरे सुरक्षित एक जंगल से दूसरे जंगल जा सकें। वैज्ञानिक निगरानी (Camera Traps): वन्यजीवों की आवाजाही और इन ब्रिजों की प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए ३ कैमरा ट्रैप लगाए गए हैं, जो भविष्य की संरक्षण योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण डेटा जुटाएंगे। ?सड़क सुरक्षा और जागरूकता: संवेदनशील क्षेत्रों में वाहन चालकों को सतर्क करने और गोल्डन लंगूर के संरक्षण के प्रति स्थानीय लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए ४ वन्यजीव जागरूकता और सड़क-सुरक्षा साइनबोर्ड लगाए गए हैं। ?वनीकरण (कलळींरी ठर्शींींरींळेप): प्राकृतिक आवास की गुणवत्ता और हरित आवरण को बढ़ाने के लिए परियोजना क्षेत्र में स्थानीय प्रजातियों के २,००० पौधे भी रोपे गए हैं।यह बहुआयामी परियोजना वन्यजीव-अनुकूल बुनियादी ढांचे, वैज्ञानिक निगरानी और स्थानीय समुदाय की भागीदारी के जरिए असम की इस अनूठी प्रजाति के दीर्घकालिक संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन को सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

सामूहिक राष्ट्रासालाकाटी में भव्य समारोह के बीच मंदिर का हुआ उद्घाटन, भारत शर्मा ने रिबन काटकर किया शुभारंभ

?कोकराझार , २१ जुलाई: सालाकाटी में आज एक अत्यंत भक्तिमय और गरिमामयी वातावरण में नवनिर्मित मंदिर का उद्घाटन संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारत शर्मा ने फीता काटकर मंदिर का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने इसे एक अत्यंत विनम्र और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध क्षण बताया। ?उद्घाटन के उपरांत अपने संबोधन में भारत शर्मा ने कहा, 'एक मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं है, बल्कि यह हमारी आस्था, भक्ति, शांति और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक जीवंत प्रतीक है।' ?इस पावन अवसर पर उन्होंने कार्यक्रम के आयोजकों, उपस्थित विशिष्ट अतिथियों और क्षेत्र के सभी श्रद्धालुओं का हृदय से आभार व्यक्त किया। लोगों द्वारा दिए गए स्नेह और सहयोग के लिए धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा, 'मेरी प्रार्थना है कि ईश्वर हम सभी को उत्तम स्वास्थ्य, सद्बुद्धि प्रदान करें और मानवता की सेवा के लिए करुणा एवं समर्पण के साथ आगे बढ़ने की शक्ति दें।' ?इस भव्य आयोजन में स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों सहित भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। न के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और सभी सदस्यों ने भोजन किया।

रामकृष्णनगर नगरपालिका ने दुकानदारों को सौंपे भूमि-अधिकार समझौता पत्र

गौतम सरकार रामकृष्णनगर, २१ जुलाई। रामकृष्णनगर नगरपालिका के अंतर्गत आने वाले बाजार के दुकानदारों को मंगलवार को उनके दुकानों की भूमि (भीटा) से संबंधित समझौता पत्र सौंपे गए। नगरपालिका कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में चेयरमैन प्रतिमा नाथ और वाइस चेयरमैन हिमांशु देव ने दुकानदारों को औपचारिक रूप से एग्रीमेंट पेपर प्रदान किए।रामकृष्णनगर नगरपालिका के वाइस चेयरमैन हिमांशु देव ने बताया कि रामकृष्णनगर बाजार छह दशक से भी अधिक पुराना है। क्षेत्र के लोगों ने वर्षों से यहां अपनी दुकानें और व्यापारिक प्रतिष्ठान संचालित किए हैं, लेकिन अधिकांश दुकानदारों के पास अपनी दुकानों से संबंधित वैध एवं स्थायी दस्तावेज नहीं थे। इसके कारण उन्हें सरकारी योजनाओं और अन्य सुविधाओं का लाभ लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।उन्होंने बताया कि नगरपालिका बोर्ड के गठन के बाद से ही बाजार के दुकानदारों को वैध दस्तावेज उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा था। अब तक लगभग ५० दुकानदारों ने इसके लिए आवेदन किया है, जिनमें से ३० दुकानदारों के साथ नगरपालिका का समझौता पूरा हो चुका है। मंगलवार को चार दुकानदारों को एग्रीमेंट पेपर सौंपकर इस प्रक्रिया की औपचारिक शुरुआत की गई।वाइस चेयरमैन हिमांशु देव ने कहा कि यह समझौता बाजार के दुकानदारों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अब एग्रीमेंट प्राप्त करने वाले दुकानदार ट्रेड लाइसेंस प्राप्त कर सकेंगे, अपनी दुकानों में वैध बिजली कनेक्शन ले सकेंगे तथा बैंक से ऋण सहित विभिन्न सरकारी और वित्तीय सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे।उन्होंने कहा कि कुछ वर्ष पूर्व रामकृष्णनगर बाजार में भीषण आग लगने की घटना हुई थी। उस समय कई दुकानदारों के पास वैध सरकारी या बाजार संबंधी दस्तावेज नहीं होने के कारण उन्हें सरकारी सहायता प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पडा.था। भविष्य में ऐसी समस्याओं से बचने के लिए नगरपालिका द्वारा दुकानदारों को वैध दस्तावेज उपलब्ध कराने की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।हिमांशु देव ने बताया कि रामकृष्णनगर नगरपालिका ने बाजार के विकास के लिए लगभग ८० करोड. रुपये की परियोजना तैयार की है। नगरपालिका बाजार को और अधिक व्यवस्थित एवं आधुनिक बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। बाजार में पेयजल की व्यवस्था भी की गई है।उन्होंने कहा कि जिन दुकानदारों के साथ नगरपालिका का वैध एग्रीमेंट हो जाएगा, उनसे भविष्य में बाजार की व्यवस्था और विकास के लिए निर्धारित शुल्क लिया जा सकेगा। वर्तमान में बाजार की सफाई और रखरखाव के लिए दुकानदारों से प्रतिदिन १० रुपये लिए जाते हैं। वैध समझौते के बाद बाजार के विकास और रखरखाव की व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाया जा सकेगा।नगरपालिका के इस कदम से लंबे समय से बाजार में व्यापार कर रहे दुकानदारों में खुशी का माहौल है।

रामकृष्णनगर में ४०वां भाषा शहीद दिवस मनाया गया

गौतम सरकार, रामकृष्णनगर, २१ जुलाई। बराक घाटी बंग साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन की रामकृष्णनगर क्षेत्रीय समिति के तत्वावधान में रविवार को रामकृष्णनगर नेताजी बाग स्थित अस्थायी शहीद वेदी पर ४०वां भाषा शहीद दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर मातृभाषा आंदोलन के शहीद जगन्मय देव और दिव्येंदु दास को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय समिति के अध्यक्ष डॉ. कृष्णरंजन पाल ने की। उपस्थित गणमान्य लोगों ने दोनों शहीदों के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद आयोजित सभा में वक्ताओं ने २१ जुलाई के ऐतिहासिक महत्व तथा मातृभाषा आंदोलन के शहीदों के बलिदान को याद किया। डॉ. कृष्णरंजन पाल ने कहा कि बराक घाटी में २१ जुलाई का दिन शहीदों की स्मृति और उनके बलिदान को नमन करने के लिए मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि १९८६ में करीमगंज में शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान जगन्मय देव और दिव्येंदु दास की हत्या की गई थी, लेकिन आज तक इस घटना का न्याय नहीं हो सका है। उन्होंने कहा कि मातृभाषा के लिए बलिदान देने वाले शहीदों को न्याय दिलाने की मांग आज भी प्रासंगिक है।सभा की अध्यक्षता कर रहीं डॉ. माला शर्मा ने कहा कि २१ जुलाई १९८६ को मातृभाषा के लिए शहीद हुए लोगों के प्रति समाज का कर्तव्य है कि वह उनके बलिदान को हमेशा याद रखे। उन्होंने कहा कि बंगला भाषा के लिए बार-बार संघर्ष और बलिदान देना पडा. है। उन्होंने सभी से अपनी मातृभाषा को गर्व के साथ सीखने, पढ़ने और उसके विकास के लिए कार्य करने का आह्वान किया।संस्था के पूर्व संपादक कृष्ण चौधरी ने कहा कि १९८६ में तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत द्वारा जारी एक भाषा संबंधी सर्कुलर के बाद बराक घाटी में व्यापक विरोध हुआ था। उन्होंने कहा कि २१ जुलाई १९८६ को करीमगंज में मुख्यमंत्री के दौरे के दौरान बंगला भाषा-प्रेमियों ने शांतिपूर्ण ढंग से काले झंडे दिखाकर विरोध प्रदर्शन किया था। इसी दौरान पुलिस गोलीबारी में जगन्मय देव और दिव्येंदु दास शहीद हो गए।कार्यक्रम में संस्था की सांस्कृतिक संपादिका कावेरी सरकार, साहित्य संपादिका मंदिरा देवराय, राजदीप तालुकदार, ऋषिकेश तालुकदार, तापस पाल, जगतदीप तालुकदार, सुप्रिय घोष सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

अरुणाचल की संस्कृति एवं परंपराओं के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से तिनसुकिया के समाजकर्मी रोंघुआन महोत्सव में शिरकत

तिनसुकिया प्रेरणा भारती २१ जुलाई - तिनसुकिया के समाजकर्मी एवं सोशल मीडिया पर सक्रिय और चर्चित चेहरा राजेश मोर को अरुणाचल प्रदेश सरकार के मंत्री *श्री वांगकी लोवांग* द्वारा राज्य की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और जनजातीय विरासत को निकट से जानने तथा उसके व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आयोजित पारंपरिक रोंघुआन महोत्सव में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। मंत्री के आमंत्रण पर उनके पैतृक गांव नतुन खेती, तिराप जिले पहुंचे, जहां पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ उनका आत्मीय स्वागत एवं सम्मान किया गया। महोत्सव के दौरान उन्होंने नोक्टे समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोक परंपराओं तथा पारंपरिक नृत्य-संगीत का अवलोकन किया। इस अवसर पर रंगफ्राह मंदिर के दर्शन कर समुदाय की आध्यात्मिक मान्यताओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी भी प्राप्त की।रंगफ्राह मंदिर में उन्होंने स्वर्गीय लात्साम खिमहुन (१९६३-२०२३) के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। स्व. खिमहुन रंगफ्राह फेथ प्रमोशन सोसाइटी के संस्थापक एवं महासचिव थे तथा तांगसा एवं नोक्टे समुदाय में स्वदेशी रंगफ्राह आस्था के संरक्षण एवं संवर्धन में उनके योगदान को आज भी विशेष सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है।कार्यक्रम के दौरान समुदाय की परंपरा को समाजकर्मी राजेश मोर को पारंपरिक जैकेट पहनाकर सम्मानित किया गया तथा पारंपरिक स्मृति-चिह्न भी भेंट किए गए।उन्होंने मंत्री वांगकी लोवांग, उनके परिवार तथा नतुन खेती के ग्रामीणों के प्रति आत्मीय आतिथ्य के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस यात्रा ने उन्हें अरुणाचल प्रदेश की जनजातीय संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक विरासत को निकट से समझने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ऐसे सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को और अधिक सुदृढ.करेंगे।

हेल्थ प्लस

खतरनाक हो सकता है नींद का न आना

नींद की समस्या से मेलाटोनिन और कोरटिसोल का संतुलन गड़बड़ा जाता है। यह दोनों हार्मोन कैन्सर कोशिकाओं को प्रभावित करते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, अपर्याप्त नींद की वजह से मेलाटोनिन हारमोन का उत्पादन बाधित होता है।

अगर इस बात की सूची बनायी जाये कि हमारे जीवन में किन बातों की कमी है, तो यह बात यकीन से कही जा सकती है कि उसमें नींद की कमी जरूर शामिल होगी। अपर्याप्त नींद से मानसिक थकान, तनाव, बेचैनी तो होती ही है, आपकी ऊर्जा भी छिन जाती है। साथ ही आपको मधुमेह, मोटापा, हाई ब्लडप्रैशर और कैन्सर तक का खतरा हो जाता है।

हमारे शरीर को हर रोज 7 से 8 घंटे की नींद की जरूरत होती है। स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के अध्ययन से मालूम हुआ कि नींद की समस्या से मेलाटोनिन और कोरटिसोल का संतुलन गड़बड़ा जाता है। ये दोनों हार्मोन कैन्सर कोशिकाओं को प्रभावित करते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, अपर्याप्त नींद की वजह से मेलाटोनिन हारमोन का उत्पादन दिमाग या ब्रेन उस समय करता है जब आप सो रहे होते हैं। मेलाटोनिन में जबरदस्त एन्टीऑक्सिडेंट गुण होते हैं। जो कोशिकाओं को नुक्सान नहीं पहुंचने देते और इस तरह वह कैन्सर में विकसित नहीं होती।

मेलाटोनिन की कमी की वजह से ओवरियों में एस्ट्रोजिन का उत्पादन भी कम हो जाता है। इससे यह खतरा हो जाता है कि महिला को अधिक एस्ट्रोजिन लेना पड़ता है और उसके इस कारण ब्रैस्ट कैन्सर हो सकता है। कम नींद की वजह से एक और महत्वपूर्ण हारमोन का संतुलन गड़बड़ा जाता है। और वह है कोरटिसोल। इसके दो काम हैं– **इम्मायून सिस्टम की गतिविधि को रेग्यूलेट करना।** उन कोशिकाओं को जारी करना जो प्राकृतिक रूप से कैन्सर के विरुद्ध लड़ती हैं और कैन्सर कोशिकाओं को नष्ट करती हैं। इस तरह देखा जाये तो नींद हमें सिर्फ तरोताजा ही नहीं करती है बल्कि हमारी मांसपेशियों को रिपेयर करती है और शरीर की प्रतिरोधात्मक क्षमता को मजबूत करती है। नींद की कमी का सीधा संबंध डिप्रेशन से है।

दरअसल, कम नींद की बड़ी वजह हमारी खराब जीवनशैली है। हमारे जिस्म को एक निश्चित मात्रा की नींद की आवश्यकता होती है और अगर वह न मिले तो शरीर तकलीफ में रहता है और इसे ही स्लीप डेट या नींद का कर्ज कहते हैं।

महत्वपूर्ण टिप्स

- हमेशा नियमित समय पर सोयें।
- सोने से 4-5 घंटे पहले कैफीन, निकोटीन और शराब न लें। कैफीन और निकोटीन वह स्टिम्यूलैंट्स हैं जो आपकी नींद की क्षमता में हस्तक्षेप करते हैं।
- यह सुनिश्चित कर लें कि आप भूखे न सोयें और सोने से पहले बड़ा डिनर न करें।
- अपने बेडरूप में टेलिविजन और कम्प्यूटर न रखें।
- शिकायत करना, अफसोस करना और चिन्ता करना छोड़ें।

महिलाओं को स्ट्रोक से बचाता है व्यायाम

अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन के जर्नल में प्रकाशित हावर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ के विशेषज्ञ फ्रैंकलूव उनके सहयोगियों द्वारा किए गए एक शोध के अनुसार अगर महिलाएं प्रतिदिन 30 मिनट व्यायाम करें तो उन्हें स्ट्रोक होने की संभावना कम होती है भले ही वह व्यायाम आधे घंटे पैदल चलना ही क्यों न हो। विशेषज्ञ फ्रैंक लू के अनुसार व्यायाम से रक्तचाप नियंत्रित रहता है और एच डी एल (हाई डेन्सिटी लिपोप्रोटीन) अच्छे कोलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ता है यही नहीं, इससे वजन भी नियंत्रित रहता है।

इस शोध में पाया गया कि जिन महिलाओं ने आधे घंटे रोज व्यायाम किया, उनमें व्यायाम न करने वाली महिलाओं की तुलना में स्ट्रोक की संभावना 20 प्रतिशत कम पायी गयी। इससे पूर्व भी बोस्टन में हुए एक अन्य शोध में यह पाया गया था कि जो महिलाएं नियमित व्यायाम जैसे पैदल चलना, जागिंग व तैराकी आदि करती हैं उन्हें हृदय रोग होने की भी संभावना कम होती है। इसके अतिरिक्त मधुमेह, ऑस्टि ओपोरोसिस और कई प्रकार के कैंसर से सुरक्षा दिलवाने में व्यायाम काफी फायदेमंद साबित हुआ है।

हृदय रोगों के लिए पैन बाइपास सर्जरी

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी एवं बदलती हुई जीवनशैली के कारण व्यस्तता इतनी बढ़ गई है कि लोगों को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिलता जिसका परिणाम है दिन पर दिन बढ़ते हृदय संबंधी रोग आज सबसे अधिक मात्रा में जो हृदय रोग पाया जाता है वह है कोरोनरी आर्टरी डिसीज। लुधियाना स्थित सिबिया मेडिकल सेंटर के निदेशक डा. एस. एस. सिबिया के अनुसार अब एक नई तकनीक की शुरुआत की गई है– 'प्राकृतिक बाईपास थैरेपी' जिससे रोगियों का इलाज किया जा रहा है। हमारे हृदय में तीन प्रमुख रक्त धमनियां होती हैं जो कि आगे सूक्ष्म कैपिलरियों को जन्म देती हैं। व यह सब धमनियां एक दूसरे से जुड़ी होती हैं।

यदि धमनियां किसी कारणवश रुक जाएं व अवरुद्ध हो जाएं तो इन चैनलो के माध्यम से हृदय को मांसपेशियों को रक्त पहुंचाया जा सकता है। इसके अंतर्गत इन चैनलों को चौड़ा कर खोल दिया जाता है ताकि हृदय की मांसपेशियों तक रक्त बिना किसी रुकावट के आवाजाही कर सके। इस तकनीक को वैज्ञानिक भाषा में न्यूमैटिकली असिस्टिड नैचुरल बाईपास या पैन बाईपास भी कहा जाता है। इस थैरेपी के कई लाभ हैं जैसे रोगी को अस्पताल में भर्ती नहीं किया जाता, हमारे किसी काम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, दर्द भी न के बराबर होता है व इसका खर्च भी कम पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसके कोई दुष्प्रभाव नहीं होते हैं।

डा. सिबिया के अनुसार, इस नई तकनीक में एक मशीन का इस्तेमाल किया जाता है जो वैज्ञानिक तरीके से इन हृदय संबंधी धमनियों पर दबाव बनाती है जिससे हृदय की मांसपेशियों में रक्त प्रवाह को बढ़ावा मिलता है। इसमें एक घंटे से भी कम समय में इन सामानांतर कैपिलरियों में नया संचार किया जाता है जिससे रक्त प्रवाह ठीक से स्थिर हो सके। इस मशीन के द्वारा हृदय में मांसपेशियों को रक्त प्रवाह तब कराया जाता है जब ये मांसपेशियां स्थिर होती हैं।

तरह-तरह के दूध की उपयोगिता

दूध गुणकारी व शक्तिदायक होता है। यह मनुष्यों की दुर्बलता को भी दूर करता है। दूध चाहे पशुओं का हो या वनस्पतियों का सभी रोगनाशक होते हैं। कई रोगों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है। कौन-सा दूध, किस काम के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है, आइए इसी से संबंधित कुछ बातें जानें।

- नींद न आने पर बकरी के दूध से हाथ व पैरों पर मालिश करने से नींद शीघ्र आती है।
- घोड़ी का दूध पीने से खांसी मिटती है।
- मां के दूध को संतरे के रस में मिलाकर छोटे बच्चों को पिलाने से बच्चों को होने वाले दस्त रुक जाते हैं।
- मां के दूध में हींग घिसकर कानों में दो बूंद डालने से कान का दर्द मिटता है।
- पपीते का दूध रुई के फाहे में रखकर दांतों के बीच रखने से दांत का दर्द मिटता है।
- जूते की रगड़ से पैरों पर पड़े छालों पर पपीते का दूध लगानने से राहत मिलती है।
- पपीते का दूध लगाने से चर्मरोग मिटते हैं।
- कच्चे फोड़े पर गूलर का दूध लगाने से फोड़ा पक कर जल्दी फूट जाता है।
- खुजली होने पर गाय के दूध में रुई के फाहे को भिगोकर शरीर पर मलने से लाभ होता है।
- भेड़ का दूध पथरी गलने में, मोटापा कम करने में तथा बालों को झड़ने से रोकने में सहायक होता है।
- मुंहासों, कील, झांई आदि को दूर करने के लिए बकरी के दूध का इस्तेमाल करें। पाश्चात्य देशों में महिलाएं चेहरा, गर्दन व हाथों को बकरी के दूध से धोती हैं और दूध से स्नान कर चिरयौवन सौंदर्य प्राप्त करती हैं।
- रक्तयुक्त अतिसार में बकरी का दूध पीने से लाभ होता है। हाथ-पैर की त्वचा फटने पर गूलर का दूध लगाने से पीड़ा कम होकर त्वचा नरम व मुलायम बनती है।
- कमजोर लोगों को भैंस का दूध पीने से शक्ति मिलती है।
- मिर्गी की बीमारी खासकर हिस्टीरिया के दौरे आदि में घोड़ी का दूध पीना लाभकारी होता है।
- फटी एड़ी में अकाव का दूध लगाने से वे शीघ्र मुलायम होती हैं।
- सोयाबीन का दूध डायबिटीज, मलेरिया, वातरोग आदि में लेने से फायदेमंद सिद्ध होता है।

घातक भी हैं दर्दनिवारक दवाएं

दर्द एक ऐसी चीज है जिसका अहसास सभी को होता है। कुछ लोग सिरदर्द से पीड़ित रहते हैं तो कुछ कमर या पीठ दर्द से, कुछ पैरों के दर्द से परेशान रहते हैं, तो कुछ हाथ के दर्द से। इस दर्द से छुटकारे के लिए कोई डॉक्टर के पास जाता है तो कोई सीधे केमिस्ट के पास से दर्दनिवारक दवाएं लेकर खा लेता है। इन दर्द निवारक दवाओं से तात्कालिक रूप से हमें आराम भले ही मिल जाए परंतु दीर्घकाल में इनका असर शरीर के विभिन्न अंगों पर पड़ता है, जिसका कोई इलाज भी नहीं है। इसलिए दर्द निवारक दवाएं तभी लेनी चाहिए जब बहुत आवश्यक हो, लेकिन अपने मन से तो कभी नहीं। पहले डॉक्टर से संपर्क करें। फिर उसके बताए अनुसार गोलियों का सेवन करना लाभप्रद होगा। ज्यादा दर्दनिवारक गोलियों के सेवन से औरतों में माहवारी में परेशानी होती है।भविष्य में ब्लड प्रेशर की तकलीफ हो जाती है। दर्द निवारण के लिए आप प्राकृतिक चिकित्सा की मदद ले सकते हैं।

न्यू साईंटिस्ट नामक जरनल के अनुसार दर्द निवारक दवाओं के सेवन के कारण एक ओर मां और बच्चे में आत्मीय संबंध नहीं पनप पाता, वहीं दूसरी ओर पैदा हुआ नवजात शिशु मां का स्तनपान करने से कतराता है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस समस्या के लिए पैनकिलर ही अधिक जिम्मेदार हैं।

बहुउपयोगी है 'जीरा'

कई विटामिन की खान जीरा सेहत के लिए बेहद गुणकारी है। इस मसाले का वानस्पतिक नाम क्यूमिनम साइमिनम है। जीरे में ए,बी, और सी विटामिन पाए जाते हैं। आयरन का भी अच्छा स्त्रोत है जीरा। आयरन से हमारा मेटाबॉलिज्म अच्छी तरह से काम करता है। इससे इम्यून सिस्टम को मजबूती मिलती है। इसके अलावा जीरा डाइजेस्टिव सिस्टम को भी अच्छी तरह से काम करने में मदद करता है।

घरेलू उपयोग

- पुराने बुखार में जीरे के फूलों का चूर्ण थोड़े से गुड़ में मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से लाभ होता है।
- सौंधी में जीरा, आंवला व कपास के पत्तों को ठण्डे पानी में समान मात्रा में पीसकर सिर पर 21 दिन तक लगाने से फायदा मिलता है।
- बिच्छू के काटने पर जीरे को महीन पीसकर थोड़ा घी व सैंधा नमक मिलाकर बारीक पीस लें। मिश्रण को थोड़ा गर्म कर काटे हुए स्थान पर लगाने से दर्द में राहत मिलती है।
- जीरे के जल से नेत्र धोने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
- मलेरिया में करेले के थोड़े से रस में जीरे का चूर्ण मिलाकर पीने से फायदा होता है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): अपने काम को प्राथमिकता से करें। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। स्वभाव में सौम्यता आपकी मदद करेगी। जीवन साथी से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। शुभांक-3-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-2-4-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। मालूम न हो समय चक्र है। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। शत्रुभय, झूठता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। धन के लेन-देन में सतर्क रहें। शुभांक-2-5-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा। वैवाहिक जीवन में प्रेम-प्रीति बढ़ेगी। जीवन साथी से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। राजकीय सम्मान प्राप्त होने के योग हैं। शांतिपूर्वक कार्य करें, जान है तो जहान है, अतःवाहन आदि चलाने में सावधानी बरतें। अपना कार्य स्वयं करें, किसी के भरोसे न रहें। शुभांक-1-5-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): नये लोगों से मेल-मिलाप भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा। घर तथा व्यवसाय को एक-दूसरे से दूर ही रखें। व्यापारिक संबंधों में प्रगति के योग हैं। स्थान परिवर्तन की संभावना है। कार्य स्थल पर नियमपूर्वक व्यवहार लाभकारी होगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। शुभांक-2-5-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): धन के लेन-देन में सतर्क रहें। बातचीत में संयम बरतें। मन में चंचलता बढ़ेगी। भावुकतावश निर्णय न लें। कर्ज देने से बचें। मानसिक व्यथा व संतान के कारण परेशानी होगी। कला क्षेत्र के जातकों को मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शुभांक-2-6-8

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): सरकारी पक्ष से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पुराना विवाद समाप्त होगा। आर्थिक मजबूती हेतु मन केन्द्रित होगा। मिल रहे अवसरों का लाभ उठाएं। आर्थिक योजनाएं फलित होंगी। बकाया धन की प्राप्ति के योग हैं। शुभांक-1-5-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): उत्साह में वृद्धि होगी। आलस्य का त्याग करें। नये आय के स्त्रोत बनेंगे। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। पसंदीदा भोज्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। लम्बे प्रवास व चुनौती पूर्ण कार्यों का सामना हो सकता है। व्यावसायिक क्षेत्र में आपकी मेहनत व लगन की परीक्षा होगी। शुभांक-3-6-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): लेन-देन में स्पष्टता बनाये रखें। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। शुभांक-3-5-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): आज की सुविधा कल नहीं मिल पायेगी, लाभ उठाएं। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। शुभ कार्यों में व्यय होगा व हर्ष पूर्ण माहौल बनेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। धार्मिक यात्रा शुभ है। शुभांक-3-5-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेंगे। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में कुछ उलझनें होंगी। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। आज का परिश्रम आगे लाभ देगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-3-6-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बच ही जाए तो अच्छा है। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। कारोबारी यात्रा सफल होगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-2-4-8

काकुरो पहेली - 1947

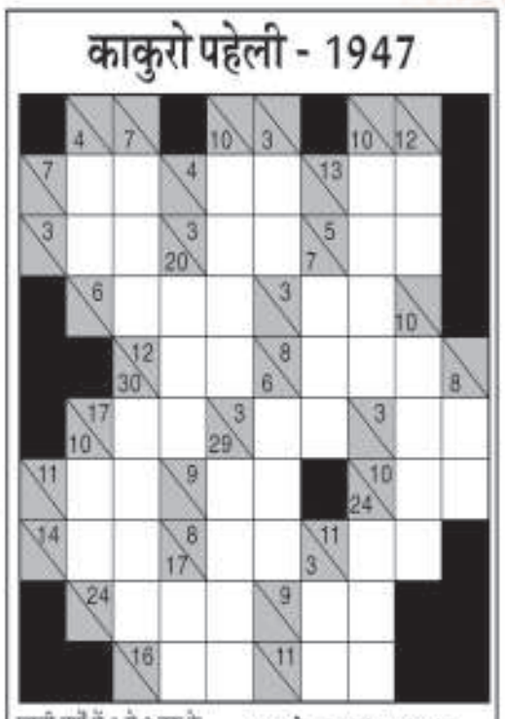

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए, किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः प्रयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

काकुरो - 1946 का हल

लॉफिंग ज़ोन

एक साधु बाजार में घूम रहा था। रास्ते में वह एक दुकानदार से बोला– बच्चा! साधु बाबा को कुछ दक्षिणा दे दें। प्रभु की लीला हुई तो तेरी किस्मत पूरी तरह बदल आएगी।

दुकानदार बोला– साधु बाबा, आप तो मुझे माफही करो। मुझे प्रभु की लीला नहीं चाहिए, पहले ही मैं अपनी एक लीला से परेशान हूं। दूसरी लीला का मैं क्या करूँगा।

□ □ □

एक नवविवाहित पति-पत्नी एक बहुत शानदार मकान में जीवन व्यतीत कर रहे थे। कुछ दिन बाद ही शहर में कुछ प्रसिद्ध कलाकारों का आगमन हुआ, उनके पास डाक से नाटक के दो टिकट आए।

टिकटों के साथ एक पर्चा था, जिस पर लिखा हुआ था– यह उपहार मैं भेज रहा हूं। भेजने वाला बाद में आएगा।

पति-पत्नी खुश होकर नाटक देखने गए। जब आधी रात को घर लौटे तो देखा कि घर की सभी वस्तुओं का सफाया हो चुका था।

मेज पर कागज का एक पर्चा पड़ा था, जिस पर लिखा था– अब पता चला टिकट किसने भेजे थे?

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली - 1947

बायें से दायें:-

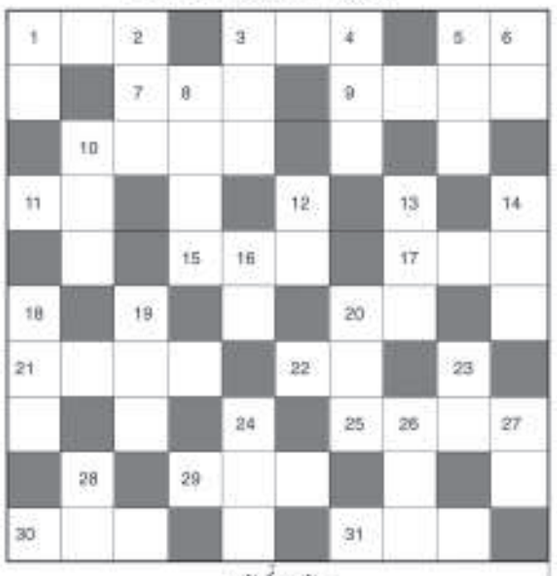

१. 'अंग्रेजी में कहते हैं' गीत वाली अमिताभ, परवीन की फिल्म-३
३. कुमार गौरव, पूनम की 'मांग लूंगा तुझे' गीत वाली फिल्म-३
५. 'शीशा हो या दिल हो' गीत और नायिका रीना राय वाली फिल्म-२
७. अक्षय, करीना की 'यार बदल ना जाना' गीत वाली फिल्म-३
९. सुनीलदत्त, किशोरकुमार के 'सामने वाली खिड़की में' रहती है-४
१०. करिश्मा, मनीषा की 'रंग दी रंग दी' गीत वाली फिल्म-४
११. नवीन निश्चल, रेखा की 'राज की बात कह' कव्वाली वाली फिल्म-२
१५. 'जिस दिल में बसा था' गीत वाली प्रदीपकुमार की फिल्म-३
१७. सुनील शेट्टी, नम्रता की 'जीना तेरी बाहों में' गीत वाली फिल्म-३
२०. 'पायल पायल तुने मुझे' गीत वाली मिथुन, श्रीदेवी की फिल्म-२
२१. सुनीलदत्त, माला की 'चली एक बार फिर से' गीत वाली फिल्म-४
२२. 'गाये जा गीत मिलन के' गीत वाली दिलीप, नर्गिस की फिल्म-२
२५. संजयदत्त, माधुरी की 'टम्का रे टम्का' गीत वाली फिल्म-४
२९. 'मैं दुनिया भुला दूंगा' गीत वाली राहुल राय, अनु की फिल्म-३
३०. मिथुन चक्रवर्ती, टीना मुनीम की १९८४ की एक फिल्म-३
३१. 'बाराना दे बाराना' गीत वाली अक्षयकुमार, शिल्पा की फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. 'हाय रे हाय रे' गीत वाली नई फिल्म-२
२. ओहरवाई अंबाले के गीत 'अंखियां मिलाके जिया' गीत वाली फिल्म-३
३. फिल्म 'अनोखी रात' के संगीतकार-३
४. अरविंद स्वामी, प्रभुदेवा, काजोल की १९९७ की एक फिल्म-३
५. 'नींद कभी रहती थी' गीत वाली फिल्म-३
६. अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, शत्रु, राखी, परवीन, विदिया की अभिनीत फिल्म-२
८. 'मेरे अंगने में तुम्हारा' गीत वाली फिल्म-४
१०. फिरोजखान, हेमा, रेखा की फिल्म-३
१२. 'माई हार्ट इज बीटिंग' गीत वाली विक्रम, लक्ष्मी की फिल्म-२
१३. किशोर कुमार, मधुबाला की 'कोई हमदम ना रहा' गीत वाली फिल्म-३
१४. 'गोरे गोरे मुखड़े पे काला काला चश्मा' गीत वाली फिल्म-३
१६. फिल्म 'शरीफ बदमाश' में नायिका कौन थी-२
१८. 'तुम रूठ के मत' गीत वाली फिल्म-३
१९. अमिताभ, जया की 'जहाँ चार यार' गीत वाली फिल्म-३
२०. 'आँखों से तूने ये क्या' गीत वाली फिल्म-३
२३. अमिताभ की 'ओ दीवानों मुझे पहचानो' गीत वाली फिल्म-२
२४. 'गोरी तेरा गांव बड़ा' गीत वाली बॉबी, करिश्मा की फिल्म-३
२६. नायक-निर्माता-निर्देशक अकबर खान, रंजीता, स्मिता की फिल्म-३
२७. अनिल, अक्षय, ऐश्वर्या की सुभाष घई निर्देशित फिल्म-२
२८. 'जाने क्या होगा रामा रे' गीत वाली बहु सितारा फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली - 1946

सूडोकु -1947

		5			8			
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6						1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
			2			7		

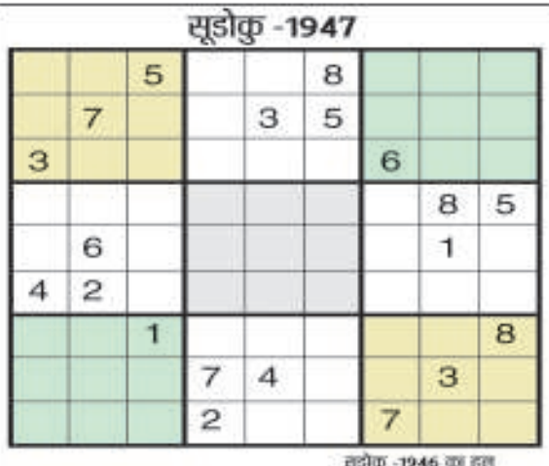

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1946 का हल

5	7	4	1	3	9	6	2	8
2	8	9	6	5	7	1	4	3
3	6	1	2	8	4	5	7	9
9	3	7	8	1	6	4	5	2
6	5	8	4	9	2	3	1	7
1	4	2	5	7	3	8	9	6
7	9	6	3	4	1	2	8	5
4	2	5	9	6	8	7	3	1
8	1	3	7	2	5	9	6	4

शब्द पहेली - 1947

बाएं से दाएं

1.महीन व कीमती कपड़ा-4
3.गिरवी रखी वस्तु-3
5.चहा,पेय पदार्थ-2
6.ऐयार,गुप्तचर-3
7.संध्या,सांझ-2
9.रसद,किराणा सामग्री-3
11.करामात,करतब-5
14.विक्रय स्थल-3
16.कलाकार-4
17.चाहत,लगन-2
18.सद,अच्छा-2
19.लंबा कोट-4
23.पानी की बूंद-3
24.कमर में पहना जाने वाला आभूषण-5
27.लोभ,लालसा-3
28.दौड़ना(अंग्रेजी-2)
30.रेखा,लाइन-3
31.अकुवा,आकड़ा-2
32.अव्यवस्थित भीड़-3
33.अचानक,सहसा-4

ऊपर से नीचे

1.शराब-2
2.सम्राट,शहंशाह-4
3.मांस जैसा खाद्य-3
4.सख्त, मद-2
5.चापलूस-4
6.प्राण, जीवन तत्व-2
8.चिंतन-3
10.भद्र, कुलीन-3
12.अपराध-3
13.पिता का भाई-2
15.यात्री दल-3
17.प्रेम लगन-3
18.भ्रमर,जलावर्त-3
20.चमड़ी,त्वचा-2
21.अनुकृति-3
22.आर्द्रक-4
23.कटि,मध्यांग-3
25.हठ करना, जिद करना,ठेना-4
26.साजन,सनम-3
27.थूक,लेस-2
29.भीगा हुआ-2
31.उम्मीद,आशा-2

शब्द पहेली -1946 का हल

'जो हुआ वो हिस्ट्री है...' बॉयफ्रेंड संग क्यों भागी थीं

नुसरत जहां

खुद किया था खुलासा

बॉलीवुड और साउथ सिनेमा की एक्ट्रेसेस के साथ ही रीजनल सिनेमा की एक्ट्रेसेस भी अक्सर सुर्खियों में बनी रहती हैं. कई एक्ट्रेसेस अपनी एक्टिंग के साथ-साथ अपनी खूबसूरती से भी फैंस का ध्यान खींच लेती हैं. आज हम आपको बंगाली सिनेमा की एक ऐसी ही हसीना के बारे में बता रहे हैं, जो ग्लैमर के मामले में बड़ी-बड़ी बॉलीवुड हसीनाओं को पछाड़ती हैं. इस एक्ट्रेस का नाम है नुसरत जहां. जो आज अपना जन्मदिन मना रही हैं.नुसरत जहां का जन्म 8 जनवरी 1990 को पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में हुआ था. आज 36 साल की हो चुकीं नुसरत का ताल्लुक मुस्लिम परिवार से है. उनका जन्म मुस्लिम परिवार में हुआ था. हालांकि एक्ट्रेस ने दूसरे धर्म में शादी की और अपने लिए हिंदू पार्टनर चुना था. बता दें कि नुसरत अपने बॉयफ्रेंड के साथ घर से भाग गई थीं. ये खुलासा खुद एक्ट्रेस ने एक बातचीत में किया था. उन्होंने अपने पार्टनर के साथ भागने को ऐतिहासिक बताया था.

पहली शादी रही अमान्य

नुसरत जहां ने साल 2019 में निखिल जैन से शादी की थी. निखिल बिजनेसमैन हैं. लेकिन,

एक्ट्रेस ने बाद में निखिल से अपनी शादी को गैर कानूनी कह दिया था. उनके मुताबिक उनकी शादी भारत में रजिस्टर नहीं हुई थी. दोनों ने तुर्की में शादी की थी. दोनों की शादी को कोलकाता की एक कोर्ट ने भी साल 2021 में गैर-कानूनी माना था.

हिंदू एक्टर से की दूसरी शादी!

साल 2020 से नुसरत अभिनेता यश दास गुप्ता के साथ रिश्ते में हैं. रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों शादी कर चुके हैं, लेकिन इसकी आधिकारिक पुष्टि कभी नहीं हुई. दोनों ने भी इस पर खुलकर कुछ नहीं कहा. लेकिन, एक इंटरव्यू में नुसरत ने कहा था कि लोग मुझसे शादी को लेकर पूछते रहते हैं तो इसका क्या मतलब है कि मैं सबको फोन करके कहती रहूं कि अरे, मैं शादीशुदा हूं. इस बयान से साफ है कि दोनों शादीशुदा हैं. वहीं दोनों का एक बेटा भी है, जिसका नाम यीशान है.

यश के साथ घर से भाग गई थीं नुसरत

एक बार नुसरत ने अपने रेडियो शो 'इश्क विद नुसरत' में बतौर गेस्ट यश को बुलाया था. तब यश ने एक्ट्रेस से सवाल किया था कि उनके रिश्ते की शुरुआत कैसे हुई? इस पर नुसरत ने कहा था, मैं तुम्हारे साथ भाग गई. इस पर यश ने कहा था, तुम भाग गई थीं? तुम्हारा मतलब है, हम हाथ पकड़ कर सड़कों पर भागे? तब नुसरत ने कहा था, नहीं, नहीं, मैं तुम्हारे साथ फरार हो गई थी. मुझे तुमसे प्यार हो गया, वो मेरी पसंद थी, इसके बाद जो हुआ वो हिस्ट्री है.

'धुरंधर' नहीं, इस फिल्म ने उड़ाए फराह खान के होश, जमकर की एक्ट्रेस की तारीफ

रणवीर सिंह और अक्षय खन्ना की फिल्म 'धुरंधर' का कहर बॉक्स ऑफिस पर जारी है. फिल्म हर दिन अपने नाम कोई न कोई रिकॉर्ड दर्ज कर रही है. अब ये भारत में हिंदी भाषा में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन चुकी है. धुरंधर ने इस मामले में अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'पुष्पा 2' का रिकॉर्ड तोड़ दिया है. इस फिल्म की हर किसी ने तारीफ की है. हालांकि धुरंधर के तूफान के बीच मशहूर कोरियोग्राफर और डायरेक्टर फराह खान एक दूसरी फिल्म देखकर हैरान रह गईं.

फराह खान अक्सर ही किसी भी मुद्दे पर खुलकर बोलने में विश्वास रखती हैं. वो किसी की तारीफ भी करती हैं तो दिल खोलकर करती हैं. धुरंधर के दबदबे के बीच उन्होंने फिल्म 'हक' की तारीफ की है. इस पिक्चर में इमरान हशमी और यामी गौतम ने लीड रोल निभाया है. इसमें यामी के काम से फराह खान बेहद खुश नजर आईं. खास बात ये है कि यामी का भी धुरंधर से कनेक्शन है. धुरंधर का डायरेक्शन उनके पति आदित्य धर ने ही किया है. खैर आइए जानते हैं कि हक और यामी की तारीफ में फराह ने क्या कहा है?

फराह ने की यामी की तारीफ

हर कोई धुरंधर देखकर इसके सितारों की तारीफ कर रहा है. लेकिन, धुरंधर के शोर के बीच अब फराह खान ने यामी की फिल्म 'हक' देखी है. इस कोर्ट रूम ड्रामा को देखने के बाद फराह ने सोशल मीडिया पर हक का पोस्टर शेयर किया है. इसमें यामी गौतम नजर आ रही हैं. फराह ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा, यामी गौतम हर अवॉर्ड जीतने के लिए तैयार हो जाओ, शानदार प्रदर्शन. यामी के साथ-साथ फराह ने इमरान हाशमी के अभिनय की भी तारीफ की है.

थिएटर के बाद OTT पर आई फिल्म

इमरान हाशमी और यामी गौतम की हक 7 नवंबर 2025 को रिलीज हुई थी. लेकिन, बॉक्स ऑफिस पर ये पिक्चर पिट गई और भारत में 20 करोड़ रुपये का कारोबार भी नहीं कर पाई. जबकि इसका बजट 40 से 45 करोड़ रुपये के बीच था. थिएटर में बेअसर होने के बाद अब हक का लुत्फ दर्शक घर बैठे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लें सकते हैं. ये पिक्चर नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही है.

दिग्गज एक्टर राजेंद्र कुमार की पत्नी शुक्ला कुमार का निधन, 89 की उम्र में कहा अलविदा

हिंदी सिनमा से नए साल के आठवे दिन एक बुरी खबर सामने आ रही है. गुजरे दौर के दिग्गज एक्टर राजेंद्र कुमार की वाइफ और 80 के दशक में हिंदी सिनेमा में अपनी शुरुआत करने वाले कुमार गौरव की मां शुक्ला कुमार का निधन हो गया है. इस खबर से बॉलीवुड सुपरस्टार संजय दत्त के घर में भी मातम पसर गया है. कुमार शुक्ला, संजय दत्त की बहन नम्रता दत्त की सास थीं.

बता दें कि शुक्ला कुमार ने 89 साल की उम्र में इस दुनिया को अलविदा कहा है. उनके निधन की खबर से बॉलीवुड में सन्नाटा पसर गया है.

सेलेब्स और लोग उन्हें सोशल मीडिया के जरिए नम आंखों के साथ श्रद्धांजलि दे रहे हैं. शुक्ला कुमार, राजेंद्र कुमार जैसे दिग्गज एक्टर की पत्नी होने के बावजूद लाइमलाइट से दूर ही रहीं. हालांकि उन्होंने बॉलीवुड की शुरुआत और फिर उसमें आते गए बदलाव को बेहद करीब से देखा था.

10 जनवरी को होगी प्रेयर मीट

राजेंद्र कुमार और शुक्ला कुमार की जोड़ी कभी बॉलीवुड की सबसे चर्चित जोड़ियों में से एक थी. दोनों शादी के बाद तीन बच्चों के पैरेंट्स बने थे. उनकी दो बेटियां डिंपल और मनोरमा और एक बेटे कुमार गौरव हुए. कुमार गौरव ने पिता की तरह ही बॉलीवुड में काम किया था, लेकिन वो सफल नहीं हो पाए थे.

राजेंद्र कुमार ने इस दुनिया को 1999 में अलविदा कह दिया था, जबकि अब करीब 26 सालों के बाद शुक्ला कुमार ने भी दुनिया छोड़ दी है. हालांकि अभी उनके निधन की वजह का पता नहीं चल पाया है. वहीं रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि 10 जनवरी को मुंबई में शुक्ला कुमार की प्रेयर मीट का आयोजन किया जाएगा.

'जुबली कुमार' के नाम से मशहूर थे राजेंद्र कुमार

हिंदी सिनेमा में कई सुपरहिट फिल्में देने के चलते राजेंद्र कुमार को 'जुबली कुमार' नाम दिया गया था. 1950 में अपना एक्टिंग करियर शुरू करने वाले राजेंद्र ने अपने करियर में सबसे पहले फिल्म 'मदर इंडिया' (1957) से बड़ी पहचान हासिल की थी. उन्होंने गूंज उठी शहनाई, धूल का फूल, मेरे महबूब,आई मिलन की बेला, संगम, आरजू और सूरज सहित कई शानदार फिल्में दी थीं.

कटरीना कैफ

और विकी कौशल ने बता दिया बेटे का नाम, जानें मतलब

बॉलीवुड स्टार विकी कौशल और कटरीना कैफ दो महीने पहले माता-पिता बने थे. 7 नवंबर 2025 को कटरीना ने एक बेटे को जन्म दिया था. कपल ने उस समय ये नहीं बताया था कि उन्होंने अपने बेटे का नाम क्या रखा है. पर अब उन्होंने बेटे के नाम से पर्दे उठा दिया है. दोनों ने अपने बेटे का नाम विहान कौशल रखा है. ये संस्कृत भाषा से लिया गया नाम है, जिसका मतलब होता है सुबह, सूर्योदय या फिर एक नई शुरुआत. कटरीना-विकी ने सोशल मीडिया पर एक प्यारा पोस्ट लिखा है.

दोनों ने एक खूबसूरती सी तस्वीर शेयर की है. फोटो में दोनों ने अपने बेटे का हाथ पकड़ रखा है. कैप्शन में कपल ने लिखा, हमारे लिए प्रकाश की करण. विहान कौशल. दोनों ने आगे लिखा, प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं. जिंदगी खूबसूरत है. हमारी दुनिया पलभर में बदल जाती है. शब्दों से परे कृतज्ञता.अब उनका ये पोस्ट सोशल मीडिया पर सामने आते ही चर्चा में आ गया है.

नाम की हो रही तारीफ

फैंस को करटरीना के बेटे का ये नाम पसंद आ रहा है. लोग कमेंट सेक्शन में लिख रहे हैं कि कितना प्यारा और खूबसूरत नाम है. परिणीति चोपड़ा समेत और भी कई फिल्मी सितारों ने दोनों के पोस्ट पर कमेंट किया है और इस नाम की तारीफ की है. फैंस कमेंट सेक्शन में लगातार हार्ट इमोजी ड्रॉप कर रहे हैं.

शादी के चार साल बाद बने पैरेंट्स

कटरीना और विकी 9 दिसंबर 2021 को शादी के बंधन में बंधन थे. दोनों शादी के चार साल के बाद पैरेंट्स बने. दोनों ने सितंबर 2025 में इस

बारे में जानकारी शेयर की थी कि जल्द ही उनकी जिंदगी में एक नन्हा मेहमान आने वाला है. फिर नवंबर 2025 में दोनों अनाउंस करते हैं कि वो माता-पिता बन चुके हैं. वहीं उसके बाद से ही लगातार चर्चा हो रही थी कि उन्होंने बेटे का नाम क्या रखा. अब आखिरकार उन्होंने बेटे का नाम बताया है.

ये दोस्ती है कमाल की!

बाघ के बच्चे के साथ अंजना

अमेरिका के एक अभयारण्य में रहने वाली चिम्पैंजी है अंजना। वह इतनी दयालु है कि उसने बहुत से जानवरों के बहुत से अनाथ बच्चों को अपनाया है। अब वह मां की तरह एक बाघ के बच्चे की देखरेख कर रही है और उसकी अठखेलियों में खुश भी हो रही है। वैसे चिम्पैंजी काफी बुद्धिमान और समझदार होते हैं और वे अपने साथ रहने वालों का भी ख्याल रखते हैं।

थेंबा का साथी एल्बर्ट

मां के मर जाने से नन्हा थेंबा (हाथी) बहुत दुखी हुआ और कई दिनों तक इसका शोक मनाता रहा। दक्षिण अफ्रीका के एक अभयारण्य में लाए जाने के बाद भी उसने खाना-पीना छोड़ रखा था। इसी दौरान उसे एल्बर्ट नाम की भेड़ के रूप में एक अच्छा दोस्त मिला। जल्द ही दोनों में गहरी दोस्ती हो गई। खेलने के साथ दोनों झपकियां भी साथ ही लेते। नए दोस्त ने इतनी खुशियां दीं कि थेंबा अपने दुख भूल गया और फिर से खाना-पीना शुरू कर दिया।

बालू-लियो और शेर खान की तिकड़ी

शेर खान दरअसल शेर नहीं, बल्कि एक बाघ है और उसके साथ बालू नाम का भालू और लियो नाम का शेर है। इन तीनों के साथ इनके मालिक ने बुरा सलूक किया था, जिस कारण बालू को चोट भी लग गई। इस मुश्किल की घड़ी में ये एक-दूसरे का सहारा बन गये और अब अमेरिका के एक अभयारण्य में ये अपना सारा वक्त साथ ही गुजारते हैं।

दुश्मन के भी दोस्त बनो

अमित लगातार कोशिश करता था कि किसी भी तरह करण को नीचा दिखा सके और दूसरे बच्चों के सामने उसकी खिल्ली उड़ा सके। लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बावजूद करण अपनी पढ़ाई में और बेहतर होता जा रहा था। चाहे बात पढ़ाई की हो या खेल की, करण हर किसी में बाजी मारता और हर जगह उसकी खूब तारीफ होती। फिर आखिर ऐसा क्या हुआ जो अमित को नीचा देखना पड़ा और वह बदल गया।

बहुत पहले की बात है। एक गांव था राजनगर। वहां पर करण नाम का एक लड़का रहता था। वह लड़का स्वभाव का बहुत अच्छा था। पढ़ाई में भी होशियार था। वह बहुत आज्ञाकारी और अपने मां-बाप का कहना मानता था। स्कूल में वह ज्यादातर बच्चों की तुलना में होशियार था। स्वभाव से वह विनम्र था और सभी के साथ अच्छा व्यवहार करता था। उसके स्कूल में चाहे उससे बड़े लड़के हों या फिर छोटे, सभी उसे पसंद करते थे। लेकिन इस कारण बहुत से लड़के करण से जलते भी थे। करण की ही क्लास में एक लड़का पढ़ता था, जिसका नाम था अमित। अमित पढ़ाई में तेज नहीं था। उसका स्कूल में खेलने में बहुत मन लगता था। वह अपने माता-पिता की बात नहीं सुनता था और उनसे रूखे तरीके से बात करता था। अपनी क्लास के लड़कों को वह चिढ़ाया करता था। यहां तक कि करण को भी वह खूब परेशान करता था। वह लगातार कोशिश करता था कि किसी भी तरह करण को नीचा दिखा सके और दूसरे बच्चों के सामने उसकी खिल्ली उड़ा सके। लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बावजूद करण अपनी पढ़ाई में और बेहतर होता जा रहा था। चाहे बात पढ़ाई की हो या खेल की, करण हर किसी में बाजी मारता और हर जगह उसकी खूब तारीफ होती।

अपने आठवें जन्मदिन पर करण को अपने पिता की तरफ से गिफ्ट के तौर पर एक सुंदर सा पेन मिला। करण स्कूल में नोट्स लिखने के लिए वह पेन ले जाने लगा। वह पेन दिखने में तो सुंदर था ही, लिखता भी तेज था। जब अमित ने करण का पेन देखा तो उसे बहुत जलन हुई। अमित ने नजरें तिरछी करके करण से पूछा, 'यह पेन तुम्हें कहां से मिला? क्या तुमने इसे खरीदा है?'

'नहीं, मुझे यह पेन मेरे मम्मी-पापा ने बर्थ डे गिफ्ट में दिया है।' करण ने जवाब दिया।

इस बात से अमित का गुस्सा और भी ज्यादा भड़क गया। अपने माता-पिता से वह खुद इतना बुरा सलूक करता था कि अब तक उसे उनसे शायद ही कोई गिफ्ट मिला हो। जब लंच का वक्त हुआ, तो उसने करण का पेन चुराने का फैसला कर लिया। जब हर कोई लंच के लिए बाहर निकल गया, तो अमित ने चुपके से करण के बैग से पेन चुरा लिया। इसके बाद उसने पेन अपने बैग में छिपा लिया और लंच करने बाहर चला गया।

जब करण वापस लौटा तो उसे बैग में अपना पेन नहीं मिला। उसने अपने टीचर को इस बारे में बताया। इसके बाद पूरी क्लास में पेन खोजा गया, लेकिन वह नहीं मिला। तब टीचर ने क्लास के मॉनीटर से कहा कि वह सबके बैग की तलाशी ले। जल्द ही अमित के बैग से पेन मिल गया। उसे गुस्से से देखते हुए टीचर ने पूछा, 'अमित, पेन तुम्हारे बैग से निकला है, इस बारे में तुम्हें कुछ कहना है?'

अमित की आंखों में आंसू आ गए। वह कुछ नहीं बोला। जब करण ने अमित को रोते हुए देखा, तो उसे अमित पर दया आ गई। उसके दिल में अमित के लिए कोई गिला-शिकवा नहीं था। उसने टीचर से कहा कि उसका खोया हुआ पेन वापस मिल गया है, अब वे अमित को सजा न दें। करण के इन शब्दों ने अमित की आंखें खोल दीं। वह हमेशा करण को परेशान करता था, लेकिन करण ने हमेशा उससे अच्छा व्यवहार किया। इस समय उसे एहसास हो रहा था कि करण कितना अच्छा लड़का है। उसने तुरंत करण और क्लास टीचर से माफी मांगी। इसके बाद करण और अमित दोस्त बन गए। फिर तो अमित का व्यवहार बदल गया और सभी उसे पसंद करने लगे। करण को अपने नए दोस्त पर नाज था।

हंसने वाला कोका

साथियों, क्या तुमने ऑस्ट्रेलिया के हंसने वाले कोका के बारे में सुना है? आजकल ऑस्ट्रेलिया में यह खूब चर्चित हो रहा है। हंसने वाले कोका का दरअसल राज यह है कि इसका मुंह इस तरह का बना होता है, मानो खुशी से हंस रहा हो। छोटे चूहे जैसा यह जानवर आजकल ऑस्ट्रेलिया में पर्यटकों के बीच खूब लोकप्रिय हो रहा है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह बेहद सेल्फी फ्रेंडली जानवर है। इसके साथ सेल्फी आती भी बड़ी मस्त है। इसकी स्माइलिंग वाले जबड़े की बनावट के कारण कुछ समय पहले इसे दुनिया के सबसे खुश जानवर की उपाधि भी मिल चुकी है। कोका वैसे तो एक साथ रहना पसंद करते हैं। आमतौर पर ये पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के दलदली इलाकों और जंगलों में रहते हैं। ऑस्ट्रेलिया के रॉटनेस्ट आइलैंड पर ये खूब पाए जाते हैं।

एक है कैट आइलैंड

तुमने वह कहानी तो सुनी ही होगी, जिसमें एक राजा ने मक्खियों को उड़ाने की नौकरी एक बंदर को दी थी। एक दिन राजा की नाक पर बैठी मक्खी को उस बंदर ने डंडे से ऐसा भगाया कि राजा की नाक ही टूट गई। उसके बाद राजा ने ऐसे दोस्तों से तौबा कर ली थी। कुछ ऐसा ही माजरा हुआ है दक्षिण जापान के एक दूर के द्वीप पर। वहां पर अधिकतर मछुआरे रहते हैं। बेचारों ने काफी समय पहले एक ऐसे दोस्त से दोस्ती कर ली, जो अब उनकी जान की मुसीबत बन गया है। दक्षिणी जापान के आओशिमा नामक द्वीप पर मछुआरों की दोस्त बनकर आई बिल्लियां अब संख्या में इतनी ज्यादा हो गई हैं कि जिधर नजर घुमाओ, बिल्लियां ही बिल्लियां नजर आती हैं। ये इतनी ज्यादा हो गई हैं कि यहां हर एक आदमी पर छह बिल्लियों का अनुपात बन गया है। बेचारे इस द्वीप के रहने वाले। हर वक्त उन्हें भगाते ही रहते हैं। कुछ उन्हें खाना भी खिलाते हैं। कुछ वर्षों पहले जब यहां चूहे बहुत ज्यादा हो गए थे और वे आए दिन मछुआरों की नाव काटने लगे, तो बिल्लियों को इस द्वीप पर लाया गया। अब चूहे तो नहीं रहे, लेकिन चारों तरफ बिल्लियां ही बिल्लियां हैं। इस द्वीप पर कुछ बुजुर्ग और युवा ही रहते हैं। बाकी सभी बड़े शहर चले गए हैं। अब यहां इतनी बिल्लियां हैं कि कोई रेस्टोरेंट या खोमचा नहीं खोला जा सकता। यहां केवल इस 'कैट आइलैंड' को देखने आने वालों को लाने-ले जाने वाली मोटरबोट ही ज्यादा दिखती हैं। हालांकि कुछ लोगों को इस द्वीप पर बिल्लियों को देखने में खूब मजा आता है।

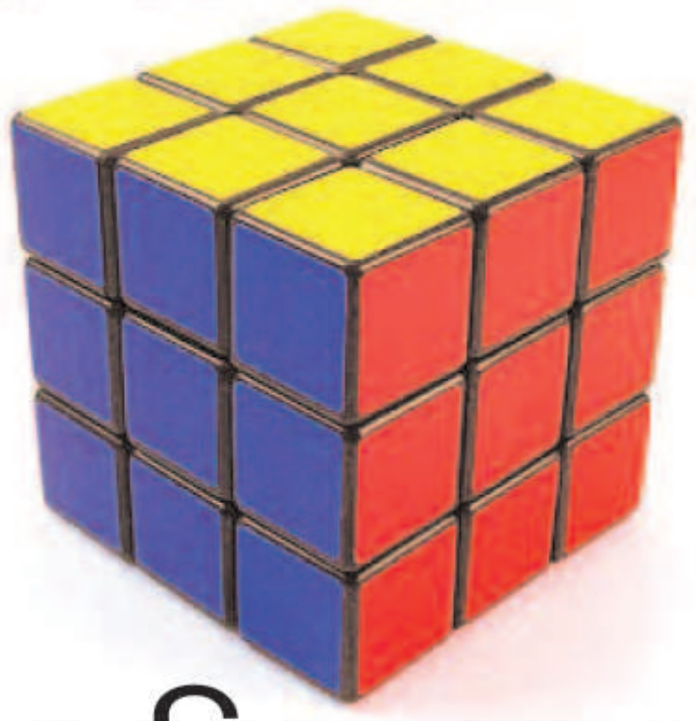

रूबिक क्यूब्स का तोड़ा रिकॉर्ड

अगर इंटेलिजेंट होने की बात आती है, तो रूबिक क्यूब्स में महारत की बात भी जरूर उठती है। आपको पता है कि रूबिक क्यूब्स क्या होते हैं?

दोस्तों, तुम सभी ने आकार में चौकोर कई रंग-बिरंगे खानों वाला यह क्यूब कभी न कभी खेला जरूर होगा। उसे हल करना आमतौर पर लोगों के लिए बहुत कठिन होता है। इसीलिए उसे जो सही-सही खेल ले, वह बड़ा बुद्धिमान माना जाता है। इस क्यूब को पसंद करने वालों में बहुत से ऐसे भी हैं, जो इसे सबसे जल्दी हल करने की प्रतियोगिता भी करते हैं। उन्हें 'स्पीड क्यूबर्स' के नाम से जाना जाता है। बहुत से लोग इसके लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे कि भारत के भार्गव नरसिम्हन। वह एक जाने-माने स्पीड क्यूबर हैं। उनके नाम रूबिक क्यूब के दो नेशनल रिकॉर्ड हैं और अब खबर है कि उन्होंने 5 रूबीस क्यूब का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। यह उन्होंने एक मिनट के अंदर हल कर दिया। यह काम उन्होंने केवल एक हाथ से ही कर दिखाया। वैसे भार्गव केवल 22 साल के हैं और अभी पढ़ाई कर रहे हैं। इनसे प्रेरणा लेकर तुम भी रूबिक क्यूब्स को जल्द से जल्द हल करने का मुकाबला रख सकते हो। तुम्हें बहुत मजा आएगा।

बाढ.प्रभावित जिलों में राहत कार्य में जुटी भाजपा, कार्यकर्ता सतर्क और सक्रिय रहें: दिलीप सैकिया

गुवाहाटी, २१ जुलाई (हि.स.)। असम प्रदेश भारतीय जनता पाटी (भाजपा) के अध्यक्ष एवं सांसद दिलीप सैकिया ने राज्य के बाढ.प्रभावित क्षेत्रों में पाटी कार्यकर्ताओं से पूरी सतर्कता और सक्रियता के साथ राहत एवं बचाव कार्यों में जुटे रहने का आह्वान किया है। पाटी ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता नागरिक प्रशासन के साथ मिलकर प्रभावित लोगों तक राहत पहुंचाने और बचाव कार्यों में सहयोग कर रहे हैं।असम भाजपा के प्रवक्ता रंजीब कुमार शर्मा ने सोमवार को जारी बयान में कहा कि जोरहाट, शिवसागर और चराईदेव जिलों में राज्य सरकार युद्धस्तर पर राहत, बचाव और पुनर्वास कार्य चला रही है। जाजी, दिखौ, दिसांग और भोगदोई नदियों के तटबंधों की लगातार निगरानी की जा रही है तथा उन्हें मजबूत करने का कार्य जारी है, जिसमें भाजपा कार्यकर्ता भी प्रशासन की सहायता कर रहे हैं।बयान के अनुसार मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा स्वयं बाढ.की स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए हैं और सभी संबंधित विभागों को राहत एवं बचाव कार्य में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरतने के निर्देश दिए हैं। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, जिला प्रशासन, असम पुलिस, अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाएं तथा अन्य एजेंसियां समन्वय के साथ राहत कार्य में जुटी हुई हैं।भाजपा ने बताया कि १९ जुलाई की रात मुख्यमंत्री ने मंत्री अंजना नेओग, बिमल बोरा, सुशांत बरगोहाई और केशव महंत को प्रभावित जिलों में भेजा, जहां वे राहत एवं पुनर्वास कार्यों की निगरानी कर रहे हैं।

पार्टी के अनुसार, दिलीप सैकिया संसद के मानसून सत्र में व्यस्त रहने के बावजूद नई दिल्ली से लगातार मंत्रियों और जिला प्रशासन के अधिकारियों के संपर्क में हैं। वहीं, शिवसागर जिले के नाजिरा क्षेत्र के चांताक और गरमुर सहित प्रभावित इलाकों में भारतीय जनता युवा मोर्चा के १०० से अधिक कार्यकर्ता चौबीसों घंटे राहत शिविर चलाकर लोगों की सहायता कर रहे हैं। इसके अलावा जोरहाट और चराईदेव जिलों में भी भाजपा कार्यकर्ता प्रशासन के साथ मिलकर राहत एवं बचाव कार्य में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

सुको का राम मंदिर चढावा चोरी मामले में एक्शन, एसआईटी का होगा पुनर्गठन, आईपीएस की अगुवाई में होगी जांच

नई दिल्ली. (एजें) २१ जुलाई राम मंदिर में चढावे की चोरी के सनसनीखेज मामले में सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में अहम सुनवाई हुई. देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन जजों की पीठ ने इस मामले में कडा रुख अपनाते हुए एक बडा आदेश पारित किया है. शीर्ष अदालत ने किसी वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी की अगुवाई में मामले की जांच कर रही विशेष जांच टीम (एसआईटी) का पुनर्गठन करने का सख्त निर्देश दिया है.

सुनवाई के दौरान सरकार का पक्ष रख रहे सॉलिसिटर जनरल (एसजी) तुषार मेहता ने अदालत को बताया कि इस मामले में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल कर दी गई है. उन्होंने कोर्ट को यह भी जानकारी दी कि मामले की जांच तेज गति से जारी है और पुलिस अब तक ८ आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है.मामले की सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस वी मोहना की पीठ ने सॉलिसिटर जनरल से सीधे तौर पर पूछा कि वर्तमान में इस मामले की जांच कौन कर रहा है. इस पर तुषार मेहता ने जवाब देते हुए कहा कि सच्चाई का पता लगाने के लिए ही एसआईटी बनाई गई थी और अब पुलिस इसकी जांच कर रही है. एसजी ने अदालत को बताया कि जांच एजेंसी ने अपनी तफ्तीश में पाया है कि यह पूरी तरह से एक संज्ञेय अपराध (कॉग्निजेबल ऑफेंस) है, जिसमें पुलिस को बिना वारंट के गिरफ्तारी करने का अधिकार होता है.सुनवाई के दौरान सीजेआई सूर्यकांत ने मामले को लेकर हो रही बयानबाजी पर नाराजगी जताते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि इस पूरे मुद्दे का किसी भी तरह से राजनीतिकरण नहीं होना चाहिए. चीफ जस्टिस ने सख्त लहजे में कहा कि अदालतें राजनीति करने की जगह नहीं हैं, यह सीधे तौर पर अपराध को अंजाम देने का एक साधारण मामला है. उन्होंने एसजी तुषार मेहता से कहा कि एसआईटी में वरिष्ठ सदस्य शामिल थे, ऐसे में पता करें कि क्या जांच के लिए नई एसआईटी बनाई जा सकती है, जिस पर एसजी ने सहमति जताते हुए नई टीम बनाकर रिकॉर्ड पर रखने की बात कही. अब इस मामले की अगली सुनवाई २७ जुलाई को होगी, जहां उत्तर प्रदेश सरकार अदालत को एसआईटी जांच के बारे में विस्तृत जानकारी देगी.

जोरहाट से कोलकाता जाने वाली इंडिगो की उडान रद्द

जोरहाट , २१ जुलाई (हि.स.)। जोरहाट से कोलकाता के लिए रवाना होने वाली इंडिगो की उडान संख्या ६ई ६१५३ में उडान भरने से ठीक पहले तकनीकी खराबी का पता चलने पर यात्रियों को सुरक्षित विमान से उतार दिया गया।बाद में एहतियात के तौर पर विमान की उडान रद्द कर दी गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार विमान के इंजन से ईंधन रिसाव (फ्यूल लीकेज) होने की आशंका जताई गई है। घटना में किसी यात्री के हताहत होने की सूचना नहीं है।

मणिपुर के नोनी जिले में भूस्खलन से राष्ट्रीय राजमार्ग-३७ पर यातायात ठप

इंफाल, २१ जुलाई: लगातार हो रही भारी वर्षा के कारण मणिपुर के नोनी जिले में जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। कई स्थानों पर भूस्खलन और मलबा गिरने की घटनाओं के चलते इंफाल-जिरीबाम को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्ग-३७ पर यातायात पूरी तरह ठप हो गया है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, अवांगखुल/लुआंगचुम भाग-१ और अवांगखुल/लुआंगचुम भाग-२ गांवों के बीच बडे.पैमाने पर हुए भूस्खलन ने राष्ट्रीय राजमार्ग-३७ के इंफाल-जिरीबाम मार्ग को पूरी तरह अवरुद्ध कर दिया है। इसके कारण इस महत्वपूर्ण मार्ग पर वाहनों की आवाजाही बंद हो गई है।राष्ट्रीय राजमार्ग-३७ मणिपुर की राजधानी इंफाल और जिरीबाम के बीच प्रमुख संपर्क मार्ग है। इसके बंद होने से यात्रियों के साथ-साथ आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति भी प्रभावित हुई है। लगातार हो रही वर्षा के कारण जिले की कई नदियों का जलस्तर भी खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया है, जिससे वर्षा जारी रहने पर बाढ. की आशंका बढ.गई है। प्रशासन स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है तथा भारी वर्षा के प्रभाव का आकलन कर रहा है। साथ ही भूस्खलन और जलभराव की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों की विशेष निगरानी की जा रही है।खराब मौसम को देखते हुए अधिकांश लोग एहतियात के तौर पर घरों में ही रह रहे हैं। लगातार बारिश से दैनिक जनजीवन भी प्रभावित हुआ है। अधिकारियों ने लोगों से अपील की है कि मौसम सामान्य होने तक भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में यात्रा करने से बचें तथा पूरी सतर्कता बरतें।लगातार हो रही इस भारी वर्षा ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि मानसून के दौरान नोनी जिला, विशेषकर राष्ट्रीय राजमार्ग-३७, भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जिसके कारण हर वर्ष इस मार्ग पर यातायात बाधित होने की घटनाएं सामने आती रहती हैं।

नीति आयोग के निवेश अनुकूलता सूचकांक में मेघालय पूर्वोत्तर और पर्वतीय राज्यों में शीर्ष पर

शिलांग, २१ जुलाई: नीति आयोग द्वारा पहली बार जारी किए गए निवेश अनुकूलता सूचकांक (इन्वेस्टमेंट फ्रेंडलीनेस इंडेक्स-आईएफआई) में नियामकीय सुगमता (रेगुलेटरी ईज) श्रेणी में मेघालय ने पूर्वोत्तर और पर्वतीय राज्यों में पहला स्थान हासिल किया है। यह उपलब्धि राज्य द्वारा निवेशकों के लिए अधिक अनुकूल और व्यवसाय-हितैषी नियामकीय व्यवस्था विकसित करने के प्रयासों को दर्शाती है।नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, नियामकीय सुगमता के आधार पर मेघालय को ८.५ अंक प्राप्त हुए, जो पूर्वोत्तर और सभी पर्वतीय राज्यों में सर्वाधिक हैं।मेघालय के बाद नागालैंड और त्रिपुरा ने ८.२-८.२ अंक प्राप्त किए, जबकि हिमाचल प्रदेश को ७.९ अंक मिले। असम और उत्तराखंड संयुक्त रूप से ७.७ अंक के साथ अगले स्थान पर रहे।रिपोर्ट के अनुसार, नियामकीय सुगमता का आकलन इस आधार पर किया जाता है कि किसी राज्य की प्रशासनिक एवं नियामकीय व्यवस्था निवेश को कितना आसान बनाती है। इसमें नियमों की पारदर्शिता, एकरूपता तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।यह भी देखा जाता है कि राज्य की नियामकीय व्यवस्था व्यवसायों के सामने आने वाली बाधाओं को किस हद तक कम करती है और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करती है।मूल्यांकन के दौरान कई महत्वपूर्ण मानकों को शामिल किया गया, जिनमें नया व्यवसाय शुरू करने में लगने वाला समय, आवश्यक अनुमतियों एवं लाइसेंसों की संख्या, बिजली और जल कनेक्शन प्राप्त करने की प्रक्रिया, औद्योगिक भूमि आवंटन की व्यवस्था तथा पर्यावरणीय स्वीकृतियों में लगने वाला समय प्रमुख हैं।इसके अलावा सिंगल विंडो क्लीयरेंस प्रणाली की प्रभावशीलता, निवेशकों की प्रतिक्रिया, वाणिज्यिक न्यायालयों की कार्यप्रणाली तथा व्यवसाय बंद करने या समाप्त करने की प्रक्रिया में लगने वाले समय का भी मूल्यांकन किया गया।नीति आयोग ने कहा कि जिन राज्यों की नियामकीय व्यवस्था पारदर्शी, सरल और पूर्वानुमान योग्य होती है, वे निवेश आकर्षित करने में अधिक सफल रहते हैं। ऐसी व्यवस्थाएं अनुपालन लागत को कम करती हैं, अनिश्चितताओं को घटाती हैं तथा व्यवसाय स्थापित करने और संचालित करने में लगने वाले समय को कम करती हैं।हालांकि नियामकीय सुगमता के मामले में मेघालय क्षेत्र में शीर्ष पर रहा, लेकिन समग्र निवेश अनुकूलता सूचकांक में उसे 'उभरते प्रदर्शनकर्ता' (इमर्जिंग परफॉर्मर्स) श्रेणी में रखा गया है। इसका अर्थ है कि राज्य को अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अभी और सुधार की आवश्यकता है।रिपोर्ट में भौतिक अवसंरचना, व्यावसायिक पारिस्थितिकी तंत्र तथा संसाधनों की उपलब्धता को ऐसे प्रमुख क्षेत्र बताया गया है, जिनमें सुधार कर मेघालय अपनी समग्र निवेश प्रतिस्पर्धात्मकता को और मजबूत कर सकता है।ताजा रैंकिंग से स्पष्ट होता है कि मेघालय सरकार प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाने, अनुमोदन प्रणाली को अधिक पारदर्शी और त्वरित बनाने तथा व्यवसाय करने में सुगमता बढाने की दिशा में लगातार प्रयास कर रही है। इन सुधारों से राज्य में निजी निवेश बढने और दीर्घकालिक आर्थिक विकास को गति मिलने की उम्मीद है।

दुमदुमा में ग्रीष्मकालीन फुटबॉल और वॉलीबॉल प्रशिक्षण का समापन

दुमदुमा प्रेरणा भारती २१ जुलाई : -- दुमदुमा नगर खेल मैदान में दुमदुमा क्रीड़ा संस्था के सौजन्य से गत ३ जुलाई से १५ वर्ष से कम आयु के खिलाड़ियों के लिए आयोजित फुटबॉल और वॉलीबॉल प्रशिक्षण का आज औपचारिक रूप से समापन हो गया। इस प्रशिक्षण शिविर में सौ से अधिक प्रशिक्षणार्थियों ने फुटबॉल और वॉलीबॉल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आज दोपहर बाद आयोजित समापन समारोह में दुमदुमा विधानसभा क्षेत्र के विधायक रूपेश ग्वाला ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। उपस्थित खिलाड़ियों, संगठनों , आयोजकों और जनता को संबोधित करते हुए विधायक श्री ग्वाला ने दुमदुमा विधानसभा क्षेत्र में खेलों के विकास के लिए उठाए गए विभिन्न कदमों की जानकारी दी और इस संबंध में सभी का सहयोग मांगा। उन्होंने यह भी कहा कि आगामी डेढ.से दो वर्षों के भीतर दुमदुमा में खेल के बुनियादी ढांचे में एक बड़ा बदलाव आएगा। इस कार्यक्रम में दुमदुमा क्रीड़ा संस्था की ओर से विधायक रूपेश ग्वाला को एक सेलेंग चादर , एक स्मृति चिह्न और एक अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में असम जातियतावादी युवा छात्र परिषद की केंद्रीय समिति के सहायक सचिव सुरजीत मोरान ने भी शुभकामना भाषण दिया। इस अवसर पर दुमदुमा के वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता अर्जुन बरुआ, वरिष्ठ पत्रकार अनुज कलिता, दुमदुमा शतदल शाखा साहित्य सभा के अध्यक्ष देवेन डेका, दुमदुमा आंचलिक छात्र संस्था के महासचिव समुज्जल बोरा सोनोवाल, दुमदुमा क्रीड़ा संस्था के सचिव राणा सोनार, फुटबॉल सचिव राहुल फुकन, वॉलीबॉल सचिव शिव गोपाल जायसवाल, असमिया युवा मंच की तिनसुकिया जिला समिति के महासचिव अचिन्त्य मेधी, दुमदुमा नगरपालिका के वार्ड नंबर पांच के पार्षद नयन डेका, पत्रकार अभिजीत खाटनियार, मनोज बरुआ, ललित तांती, करन तांती, अजय ठाकुर, निर्मल बोरा, सुरजीत चौधरी, सामाजिक कार्यकर्ता सुरजीत बोरा, अक्कन डेका सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प्रशिक्षण शिविर में सौ से अधिक प्रशिक्षणार्थियों ने फुटबॉल और वॉलीबॉल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। फुटबॉल का प्रशिक्षण क्रमशः शक्ति मोरान, विवेक कंद, सीमांत मोरान, विवेक तांती, रोहित सुरीन और विवेक भुजेल ने दिया, जबकि वॉलीबॉल का प्रशिक्षण राष्ट्रीय स्तर के वॉलीबॉल खिलाड़ी शिव गोपाल जायसवाल ने दिया। आज के समापन समारोह में विधायक रूपेश ग्वाला और उपस्थित अन्य अतिथियों ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

पूर्व जिला परिषद सदस्य एवं समाजसेवी विश्वजीत सिंह क्षेत्री का निधन

शिव कुमार, शिलचर, २१ जुलाई। जयपुर राजाबाजार क्षेत्र के पूर्व जिला परिषद सदस्य, प्रख्यात समाजसेवी एवं प्रतिष्ठित व्यवसायी विश्वजीत सिंह क्षेत्री का मंगलवार तडके निधन हो गया। उनके निधन की खबर से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड.गई। राजनीतिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जगत से जुडे.लोगों ने उनके निधन को समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, गत १३ जुलाई को अचानक तबीयत बिगडने के बाद उन्हें शिलचर के मेहरपुर स्थित एक निजी अस्पताल में भती कराया गया था। चिकित्सकों की टीम ने लगभग नौ दिनों तक उनका उपचार किया, लेकिन उनकी स्थिति लगातार गंभीर बनी रही। मंगलवार सुबह करीब ४:३० बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। विश्वजीत सिंह क्षेत्री अपने शांत स्वभाव, मृदुभाषी व्यक्तित्व और मिलनसार व्यवहार के कारण समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय थे। जिला परिषद सदस्य के रूप में उन्होंने क्षेत्र के विकास तथा जनसमस्याओं के समाधान के लिए सक्रिय भूमिका निभाई। समाजसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहने की भावना ने उन्हें आम लोगों के बीच विशेष सम्मान दिलाया था।उनके निधन का समाचार मिलते ही बडी संख्या में शुभचिंतक, मित्र, समर्थक एवं क्षेत्रवासी उनके निवास पर पहुंचे और शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। लोगों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।विश्वजीत सिंह क्षेत्री अपने पीछे वृद्ध माता, पत्नी, तीन भाई, दो बहन, एक पुत्र और एक पुत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड.गए हैं। उनके असामयिक निधन से परिवार पर दुखों का पहाड.टूट पडा है।असम सरकार के मंत्री कौशिक राय, शिलचर के व्यवसायी विकास सिंह सहित विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों और अनेक लोगों ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। शोक व्यक्त करने वालों ने कहा कि विश्वजीत सिंह क्षेत्री का जीवन सादगी, समाजसेवा और जनकल्याण के लिए समर्पित रहा। उनके निधन से समाज ने एक कर्मठ समाजसेवी, लोकप्रिय जनप्रतिनिधि और सरल व्यक्तित्व को खो दिया है।

शोक संतप्त लोगों ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों को इस अपार दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

हीरालाल प्रजापति: चाय बागान के श्रमिक परिवार से समाजसेवा और शिक्षा के शिखर तक

अशोक वर्मा

मेदली (सेपिंजुरी) चाय बागान के अंतर्गत स्थित तिलभूम चाय बागान में हीरालाल प्रजापति का जन्म हुआ। वे चार भाइयों में तीसरे थे। उनके माता-पिता दोनों ही चाय बागान के श्रमिक थे। आर्थिक अभाव के कारण परिवार में शिक्षा का अनुकूल वातावरण नहीं था। बडे. दोनों भाइयों की पढाई अधिक आगे नहीं बढ.सकी, किंतु हीरालाल ने बचपन से ही शिक्षा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

हर व्यक्ति के भीतर आगे बढने की क्षमता होती है, परंतु उस क्षमता को परिश्रम, अनुशासन और दृढ. निश्चय से ही साकार किया जा सकता है। कुछ लोगों में यह चेतना बचपन से ही जागृत हो जाती है और हीरालाल प्रजापति उन्हीं व्यक्तित्वों में से एक थे।

उन्होंने तिलभूम पाठशाला से प्राथमिक शिक्षा पूरी की और उसके बाद एम.ई. स्कूल में प्रवेश लिया। एम.ई. उत्तीर्ण करने के बाद वे दुर्लभछोडा में अपने एक रिश्तेदार के घर रहने लगे और वहाँ के उच्च विद्यालय में तीन वर्ष तक अध्ययन किया। परिस्थितियाँ अनुकूल न रहने पर वे पुनः अपने चाय बागान लौट आए और सोनाखीरा चाय बागान स्थित श्री प्रसाद राय हाई स्कूल में दाखिला लिया। उस समय इस विद्यालय के समर्पित शिक्षकों के अथक प्रयासों के कारण माध्यमिक परीक्षा का परिणाम अत्यंत उत्कृष्ट रहता था। यहीं से माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने करीमगंज कॉलेज में प्रवेश लेने का दृढ.संकल्प किया। श्रमिक परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ उनके मार्ग में बडी बाधा थीं, किंतु आत्मविश्वास और दृढ. इच्छाशक्ति के सामने अभाव भी हार मान लेते हैं। हीरालाल करीमगंज कॉलेज में प्रवेश लेने में सफल हुए और उन्हें निम्बार्क आश्रम में रहने का स्थान मिल गया। भोजन और अन्य आवश्यकताओं की कमी के बावजूद उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा। उन्होंने प्री-यूनिवर्सिटी परीक्षा वाणिज्य संकाय से उत्तीर्ण की और तत्पश्चात तीन वर्षीय बी.कॉम. पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया।

इसी दौरान उनका परिचय इचाबिल के शंभु कानू से हुआ। शंभु कानू के व्यक्तित्व से वे दो क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रभावित हुए.पहला, रंगमंच और नाट्य गतिविधियाँ; दूसरा, चाय बागान के श्रमिक समाज के उत्थान के लिए संगठनात्मक जागरण। दोनों ने मिलकर चाय बागानों के विद्यार्थियों को संगठित करने का अभियान प्रारंभ किया। वे विभिन्न चाय बागानों का दौरा कर छात्र संगठन की शाखाएँ स्थापित करने लगे। इसी क्रम में उनका संपर्क असम के छात्र संगठनों के पदाधिकारियों से भी हुआ।

असम के श्रमिक छात्र संगठन के आह्वान पर हीरालाल प्रजापति और शंभु कानू तत्कालीन राजधानी शिलांग स्थित श्रमिक छात्रावास पहुँचे, जहाँ संगठन को सशक्त बनाने तथा उसकी कार्यप्रणाली निर्धारित करने के उद्देश्य से विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। एक ओर छात्र संगठन की गतिविधियाँ चलती रहीं तो दूसरी ओर नाट्याभ्यास और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारियाँ भी जारी रहीं। हीरालाल का दृढ. विश्वास था कि शिक्षा के प्रसार के बिना किसी भी समाज या समुदाय का वास्तविक विकास संभव नहीं है।

आर्थिक कठिनाइयों के कारण जब उनकी उच्च शिक्षा बीच में ही रुक गई, तब भी उन्होंने समाजसेवा का मार्ग नहीं छोडा। चाय बागान के एक अन्य युवक के सहयोग से उन्होंने एक हिंदी पाठशाला की स्थापना की। उसी समय तत्कालीन विधायक विश्वनाथ उपाध्याय के प्रयासों से बराक क्षेत्र में हिंदी विद्यालयों को असम सरकार से मान्यता मिलने लगी थी। हीरालाल द्वारा स्थापित विद्यालय को एक शिक्षक पद की स्वीकृति भी मिली। उल्लेखनीय है कि उन्होंने स्वयं वह पद स्वीकार करने के बजाय अपने सहयोगी को यह अवसर प्रदान किया। उनकी इस उदारता और निस्वार्थ भावना ने स्थानीय समाज में उनके प्रति सम्मान और विश्वास को और अधिक बढा दिया।

शंभु कानू के साथ मिलकर उन्होंने जिले के चाय बागानों के युवाओं और विद्यार्थियों को संगठित किया तथा अन्याय और शोषण के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाई।

समाजहित के प्रति उनकी निष्ठा का ही परिणाम था कि बाद में उन्हें तिलभूम स्थित वेंचर हाई स्कूल में हिंदी शिक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया। कई वर्षों तक उन्होंने अत्यंत अल्प मानदेय पर भी धैर्य और समर्पण के साथ शिक्षण कार्य किया। अंततः विद्यालय को सरकारी मान्यता प्राप्त हुई और उन्हें नियमित रूप से हिंदी शिक्षक का पद मिला। निर्धारित समय पर सेवानिवृत्त होने के बाद भी वे विभिन्न सामाजिक और शैक्षिक गतिविधियों से जुडे.हुए हैं तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार समाजसेवा में निरंतर योगदान दे रहे हैं। हीरालाल प्रजापति का जीवन इस सत्य का सशक्त उदाहरण है कि श्रमिक परिवार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी कठिन परिश्रम, शिक्षा और अटूट संकल्प के बल पर जीवन में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकता है। आज उनके सभी बच्चे शिक्षित, प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से सुदृढ.जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनका संघर्षपूर्ण जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

बांग्ला से हिंदी अनुवाद: दिलीप कुमार

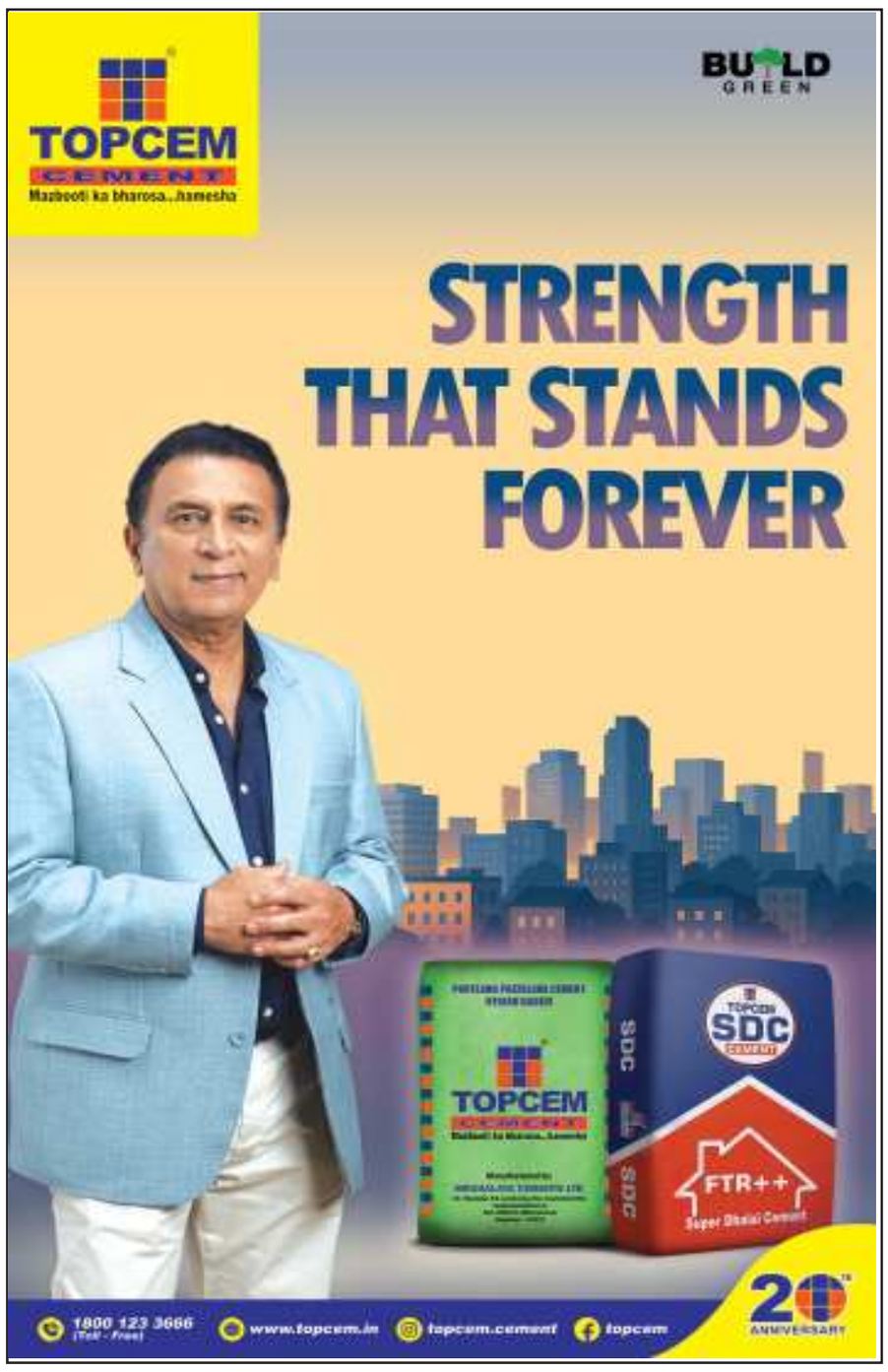

मुद्रक, प्रकाशक व स्वामी श्री दिलीप कुमार द्वारा भारती ऑफसेट मुद्रणालय, कटहल रोड, शिलचर-05 (असम) से मुद्रित व प्रकाशित, सम्पादक-श्रीमती सीमा कुमार, Ph & Fax (03842) 242633, (M) 9435213512